सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

फरवरी, 2014 वर्ष 12 अंक 12

रज़ाए रब

ज़ालिम जो तू बेचैन है याँ जुल्म ढाने के लिए
है जहन्नम मुंतज़िर वाँ तुझ को पाने के लिए
तूने गर तौबा न की और जुल्म पर क़ाइम रहा
मुस्तइद फिर तू रहे अपने ठिकाने के लिए
सब्र वालों को मिलेगा सब्र का बदला ज़रूर
है रज़ाए रब मुक़द्दर सब्र वालों के लिए
यह जान ले मोमिन तेरी दुनिया तो है दारुल मिहन
पर आख़िरत होगी तेरी सुख चैन पाने के लिए
जो हुआ या जो भी होगा है लिखा तक़्दीर में
हक़ पे हम साबित रहें उक़बा बनाने के लिए

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूंपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
दोनों जहाँ की भलाइयाँ	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	7
ज़िक्रे अजवाज व औलादे	इदारा	10
प्यारे नबी की शिक्षायें	तहरीम मुशीर माही	12
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	15
हम अपना खुद जायज़ा लें	मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद ज़हूर नदवी	18
दाखिली दुश्मन खारिज़ी दुश्मन	मौ0 डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी	20
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	25
हज़रत नबी सल्ल0 की	इदारा	29
नबी सल्ल0 की तज्हीजो तक्फीन	इदारा	31
इख़्लास और उसके बरकात	मौ0 सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0	33
मोमिन की सिफ़ात		37
अहले ख़ैर हज़रात से अपील		39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुअर्नि की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बक़रः

अनुवाद :- और जब तलाक़ दी तुमने औरतों को फिर अपनी इद्दत[1] तक पहुंचीं तो रख लो उनको दस्तूर के मुवाफिक या छोड़ दो उनको भली तरह से और न रोके रखो उन को सताने के लिए ताकि उन पर ज़्यादती करो[2] और जो ऐसा करेगा वह बेशक अपना ही नुकसान करेगा, और मत ठहराओ अल्लाह के अह्काम को हंसी, और याद करो अल्लाह का एहसान जो तुम पर है और उसको कि जो उतारी तुम पर किताब और इल्म की बातें कि तुम को नसीहत करता है उसके साथ, और डरते रहो अल्लाह से और जान रखो कि अल्लाह सब कुछ जानता है[3](231) और जब तलाक़ दी तुमने औरतों को फिर पूरा कर चुकी अपनी इद्दत को तो अब न रोको उनको इससे कि निकाह कर लें अपने उन्हीं शौहरों से जब कि दोनों आपस में राजी हो जायें दस्तूर के मुवाफिक[4] यह नसीहत उसको की जाती है जो कि तुम में से ईमान रखता है अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर[5] इसमें तुम्हारे वास्ते बड़ी सुथराई है और बहुत पाकीज़गी और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते[6](232)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. यानी इद्दत खत्म होने को आई।

2. यानी इद्दत के खत्म होने तक शौहर को अधिकार है कि उस औरत को मुवाफकत और एकता के साथ फिर मिला ले या खूबी और रजामंदी के साथ बिल्कुल छोड़ दे यह कदापि जायज नहीं कि कैद में रख कर उसको सताने के इरादे से दोबारा रखे जैसा कि कुछ लोग किया करते थे।

फायदा: पिछली आयत में यह बतलाया गया था कि दो तलाक़ तक शौहर को अधिकार है कि औरत को उम्दगी से फिर मिला ले या बिल्कुल छोड़ दे अब इस आयत में यह कहा गया है कि यह अधिकार सिर्फ इद्दत तक है इद्दत के बाद शौहर को उक्त अधिकार हासिल न होगा इसलिए कोई तकरार (पुनरावृत्ति) का शुब्हः न करे।

3. निकाह, तलाक़, ईला, खुलाअ, रजअत, हलालः वगैरह में बड़ी हिकमतें और मस्लहतें हैं उनमें हीले बहाने करने और बेहूदा मकासिद को दखल देना मसलन कोई रजअत करले और उससे मक्सूद औरत को तंग करना है तो गोया अल्लाह के अहकाम के साथ ठट्टे बाज़ी ठहरी अल्लाह की पनाह, अल्लाह को सब कुछ रौशन है ऐसे हीलों से सेवाय नुकसान और क्या हासिल हो सकता है।

4. एक औरत को उसके शौहर ने एक या दो तलाक़ दी और फिर इद्दत में रजअत

शेष पृष्ठ.....30 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

नफ़्ल नमाज़ घर में अफ़ज़ल है-

हज़रत जैद बिन साबित रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ लोगो! अपने अपने घरों में नमाज़ पढ़ा करो, अफज़ल तरीन नमाज़ फर्ज के बाद, घर की नमाज़ है।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

. हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि नमाज़ का कुछ हिस्सा अपने घरों के लिए भी रोखो, अपने घरों को कब्रिस्तान न बनाओ।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब जमाअत के साथ नमाज़ पूरी कर चुको तो कुछ हिस्सा अपने घर के लिए रहने दो, अल्लाह तआला घर में नमाज़ पढ़ने से भलाई अता फरमायेगा। (मुस्लिम)

फर्ज व नफ़्ल में अंतर मुनासिब है-

हज़रत उमर इब्ने अता रज़ि0 से रिवायत है कि नाफे इब्ने जुबैर रज़ि0 ने उनको साइब इब्ने उख्ते नमिर के पास भेजा कि वह चीज़ मुझको बताओ जो तुमने हज़रत मुआविया रज़ि0 की नमाज़ में देखी थी। हज़रत साइब ने कहा हाँ मैंने जुमे की नमाज़ हज़रत मुआविया रज़ि0 के साथ "मकसूरा" में पढ़ी थी जब इमाम ने सलाम फेरा तो मैं उसी जगह नमाज़ पढ़ने लगा, हज़रत मुआविया रज़ि0 घर गये और एक आदमी भेज कर मुझे बुलवाया और कहा कि अब ऐसा न करना, जब तुम जुमे की नमाज़ पढ़ चुका करो तो थोड़ा हट के दूसरी नमाज़ शुरु किया करो, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम को हुक्म दिया है कि हम एक नमाज़ को दूसरी नमाज़ से न मिलायें, बीच में बात कर लो या हट कर नमाज़ पढ़ो। (मुस्लिम)

वित्र की तर्गीब (उभारना)-

हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि वित्र नमाज़ की तरह नहीं है लेकिन रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको सुन्नत करार दिया है और फरमाया कि अल्लाह तआला वित्र है यानी एक है और वित्र को पसन्द फरमाया है, तो ऐ ईमान वालो वित्र नमाज़ पढ़ा करो। (अबूदाऊद)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वित्र, अव्वल रात में भी पढ़ी है और आधी रात में भी यहां तक की सुब्ह होते हुई पढ़ ली है। (बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया वित्र को रात की नमाज़ का खातमा बनाओ।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

शेष पृष्ठ.....38 पर

दोनों जहाँ की भलाइयाँ चाहिए

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

कुर्आन मजीद में अल्लाह तआला का इरशाद है "मिनन्नासि मंय्यकूलु, रब्बना आतिना फिद्दुनिया वमा लहू फिलआखिरति मिन् ख़लाक़। व मिन्हुम, मंय्यकूलु रब्बना आतिना फिद्दुनिया हसनतंव्व फिल आखिरति हसनतंव्व वकिना अज़ाबन्नारा।

(अल बक़रहः 200, 201)

अर्थ : कुछ लोग हैं जो दुआ में कहते हैं ऐ हमारे रब हम को दुनिया दे, उनके लिए आखिरत में कोई हिस्सा नहीं है। और उन्हीं में से कुछ लोग अपनी दुआ में कहते हैं कि ऐ हमारे रब हम को दुनिया में भलाई दे और आखिरत में भी भलाई दे और हमको जहन्नम की आग से बचा ले।

इसके बाद की आयत में बताया गया है कि यही वह लोग हैं जिनको अपनी दुआ का एक हिस्सा तो मिल कर रहेगा (यानी आखिरत का हिस्सा ज़रूर मिलेगा) अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

हमारा अक़ीदा है और यह हक़ीकत है कि मरने के बाद एक दूसरी ज़िन्दगी शुरुअ होती है पहले क़ब्र की लम्बी ज़िन्दगी है, फिर कियामत आएगी, हर एक का हिसाब किताब होगा। यह हिसाब किताब अल्लाह तआला के दिये उस कानून की मुवाफकत (अनुकूलता) या मुख़ालफत (विरोध) की बुनियाद पर होगा जो अल्लाह तआला ने अपने नबियों और रसूलों के ज़रिए अपने बन्दों तक पहुंचाया है। जिसने अपने ज़माने के नबी के दिए हुए क़ानून (शरीअत) पर अमल किया होगा वह आखिरत की ज़िन्दगी में अल्लाह की रजा और उसका इनआम ज़न्नत पाएगा और जिसने अपने ज़माने के नबी की शरीअ़त पर अमल न किया होगा उनको नबी न माना होगा वह अल्लाह की नाराज़गी और जहन्नम की सज़ा पाएगा, आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आ जाने के बाद तमाम इन्सानों के लिए आप ही की शरीअत पर अमल करना ज़रूरी है। कियामत के बाद की वह ज़िन्दगी हमेशा हमेश की है। यह सारी बातें हम को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल हुए कुर्आन शरीफ़ से और आपकी अहादीस से मालूम हुईं।

अब सोचने की बात है जब हक़ीक़त यह है तो यह आरिज़ी (अस्थाई) दुनिया तो आसानी की हो या तकलीफ की एक दिन खत्म हो कर रहेगी अच्छा यही है कि यहां भी आराम व सुख मिले लेकिन अगर सुख मिला मगर आखिरत की ज़िन्दगी के सुख से महरूम (वंचित) हो गये तो क्या इससे बढ़ कर और कोई घाटा हो सकता है?

शुरुअ में कुर्आन शरीफ़ की दो दुआएं नक्ल हुई हैं, पहली बात तो यह जान लेना चाहिए कि हम कुर्आन शरीफ की आयतें हिन्दी में लिखना

पसन्द नहीं करते कि जानकार से पढ़े बिना उनका सहीह पढ़ना मुमकिन नहीं मगर मजबूरी दर्जे पर लिख भी देता हूँ खास तौर से दुआऐं।

इनमें से पहली दुआ में बताया गया है कि सिर्फ दुनिया चाहने वाला आखिरत में महरूम रहेगा, इसलिए यह दुआ हरगिज न करें। दूसरी आयत में दुनिया की भलाई भी मांगी गई है और आखिरत की भी इस पर कुछ गुफ़्तगू करने से पहले यह बता देना ज़रूरी है कि हदीस में आता है कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ बहुत मांगा करते थे, नीज रिवायत में आता है कि कअ़बे के तवाफ़ में रुक्ने यमानी और हजरे अस्वद के बीच में यह दुआ बड़े एहतिमाम से पढ़ते थे।

इस दुआ के बाद वाली आयात में बताया गया है कि इस दुआ के करने वाले को एक हिस्सा मिल के रहता है, इसमें इरशाद है कि दो दुआओं में से एक तो मिल कर रहती हैं और वह आखिरत वाली दुआ है। हम सूर–ए–शूरा की आयत 20 पर ध्यान देते हैं तो वहां बताया गया है कि "जो आखिरत की खेती चाहता है हम उसकी खेती में जियादती करते हैं यानी बढ़ा देते हैं (यह बढ़ाना सात सौ गुना या उससे भी ज़्यादा हो सकता है) और जो दुनिया की खेती का इरादा करता है हम उसको उसमें से कुछ दे देते हैं लेकिन आखिरत में उसका कोई हिस्सा नहीं होता। खेती से मुराद यहां फायदा है।

इसी तरह हम सूर–ए–बनी इसराईल की आयत 18 व 19 में पाते हैं कि अल्लाह तआला ने फरमाया जो मुझ से जल्दी वाली चीज़ यानी सिर्फ दुनिया का फाइदा चाहता है तो हम जितना चाहते हैं और जिसे चाहते हैं दुनिया दे देते हैं फिर उसके लिए (आखिरत में) जन्नम का फैसला करते हैं जिस में वह बुरा हो कर जलील होकर अल्लाह की रहमत से दूर हो कर दाखिल होता है। यह आयत 18 का मफहूम है। जिससे यह समझ में आता है कि सिर्फ दुनिया चाहना और आखिरत को नज़र अन्दाज़ करना बहुत ही बुरा है, फिर दुनिया चाहने वाला दुनिया से जितना मांगता है वह उतना पा भी नहीं जाता अल्लाह तआला जितना चाहते हैं देते हैं, मगर उसके लिए आखिरत में बहुत बड़े घाटे और तक्लीफ की बात है।

लेकिन आयत नं0 19 में बतलाया गया है कि जो शख़्स (मुझ से) आखिरत चाहता है और उसके लिए कोशिश भी करता है (यानी अपने ज़माने के नबी की पैरवी करता है, और आखिरी नबी के आ जाने के बाद सिर्फ आखिरी नबी की पैरवी करता है) यानी वह मोमिन होता है तो हम उसको उसकी कोशिश का बदला (जन्नत की शक्ल में) देंगे। उसके बाद की आयत में बताया गया है कि हम हर एक की मदद करते हैं इस की भी उसकी भी और (ऐ नबी) आपके रब की देन पर कोई रोक नहीं अल्लाह तआला ने जिसे पैदा किया उसे उसकी ज़िन्दगी तक रोज़ी जरूर देगा लेकिन

शेष पृष्ठ.....24 पर

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

मक्का मुकर्रमा रवानगी–

बहर हाल पोशीदा तरीके से मुसलमानों ने तैयारी की और तैयारी हो जाने पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को लेकर मक्का मुकर्रमा के लिए रवाना हुए और अल्लाह तआला ने यह मदद फरमाई कि कुरैश को आपकी रवानगी की इत्तिला नहीं मिली लेकिन वह डर रहे थे, और अबू सुफियान मालूमात हालिस करने की फिक्र में रहते थे, उनके साथ हकीम बिन हिजाम, बुदैल बिन वरक़ा भी मालूमात के चक्कर में रह रहे थे[1]। इस वाकिए से पहले ही हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब जो अब तक मक्का में थे और ज़ाहिर में कुरैश के साथ थे, लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत का तअल्लुक रखते थे, गोया अन्दर से मुसलमान थे, मक्का से सफर करके आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहुंचे और बाकाएदा मुसलमान हो गए[2]। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक़ामे जोहफा तक जो राबिग़ के पास है पहुंच गऐ थे हज़रत अब्बास उनसे मिले और उनके साथ हो गए, कुरैश को उस वक्त तक इसकी ख़बर न थी, फिर मुसलमानों का लश्कर जब मक्का से 10–15 किलो मीटर के फासले पर इशा के वक्त मक़ाम मर्रुज़्ज़हरान पहुंचा तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि लश्कर में हर तरफ रौशनी करने के लिए आग जलायी जाये[3]। मक़सद यह था कि अब वह दुश्मन के क़रीब पहुंच चुके हैं, दुश्मन मुसलमानों की कसरत (अधिकता) और ताकत को महसूस करके मुकाबिले से खुद ही बाज़ आ जाये चुनांचे लश्कर में हर तरफ आग जलायी गई, इस तरह तकरीबन 10 हज़ार जगहों पर आग नज़र आने लगी, इसी के साथ हज़रत अब्बास रज़ि0 हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खच्चर पर बैठ कर निकले कि कोई चरवाहा या कोई आदमी मिल जाये तो उसको भेज कर अब कुरैश को बाखबर कर दिया जाये कि मुसलमानों का लश्करे अज़ीम आ रहा है और सूरतेहाल को समझ लें और आ कर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत कुबूल कर लें। इससे पहले कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी ताकत के साथ मक्के में दाखिल हों इस तरह वह तबाही से बच जायेंगे[4]।

कुरैश के सेनापति अबू सुफियान का इस्लाम लाना–

हज़रत अब्बास रज़ि0 कहते हैं कि मैं इसी फिक्र में जा रहा था कि मुझे अबू सुफियान और बुदैल की आवाज़ सुनने को मिली उन्होंने दूर से

1. सीरते इब्ने हिशाम 2/400
2. ज़ादुल मआद 3/400
3. ज़ादुल मआद 3/400
4. ज़ादुल मआद 3/401

आग देख ली थी और आपस में कह रहे थे कि इतनी ज़्यादा आग फैली हुई मैंने आज तक नहीं देखी थी, और इतना बड़ा लश्कर नहीं देखा था। बुदैल कहने लगे यह कबील–ए–ख़ुज़ाआ मालूम होता है जिससे हमारी लड़ाई हुई है, अबू सुफियान ने कहा कि ख़ुज़ाआ का क़बीला इतना बड़ा नहीं है कि उसकी आग इतनी फैली हुई हो सकती हो, इस पर मैंने अबू सुफियान को पुकारा उन्होंने मेरी आवाज़ पहचान ली और कहा कि तुम अबुल फज़ल हो यानी अब्बास, मैंने कहा "हाँ" उन्होंने कहा अल्लाह तुम्हें सलामत रखे तुम यहां कैसे? मैंने कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने लोगों के साथ आ गए हैं, और कुरैश को बखुदा अब बहुत बड़ी मुसीबत का सामना है इस पर अबू सुफियान ने कहा कि अब क्या तदबीर की जाये, मैंने कहा बखुदा तुम अगर किसी को मिल गये तो तुम्हारी गर्दन ही उड़ा दी जायेगी तुम यह करो कि इस ख़च्चर पर मेरे पीछे बैठ जाओ मैं हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास तुमको पहुंचा दूँ, तुम अपने बचाव का इन्तिज़ाम उनसे करा लो, चुनांचे वह मेरे पीछे बैठ गए और मैं उनको ले आया, लेकिन मुसलमानों की फौज की जगहों से जहां–जहां से गुज़रता था वह कहते थे कि यह कौन जा रहा है? और जब हम को देखते थे कि अल्लाह के रसूल के चचा हैं और उन्हीं के ख्च्चर पर हैं तो फिर कुछ नहीं बोलते थे, यहां तक कि मैं उमर की जगह से गुज़रा उन्होंने कहा यह कौन है और लपक कर मेरी तरफ़ आए और अबू सुफियान को देखा तो कहा : यह अल्लाह का दुश्मन, अल्लाह का शुक्र यह मिल गया, अब मुझे इसको मारने का मौका मिल रहा है, मुआहिदे की पाबन्दी अब तो बाकी रही नहीं और तेज़ी से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ दौड़े कि वहां जा कर अबू सुफियान को मारने की इजाज़त लें, लेकिन मैंने खच्चर को तेज़ भगाया और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहुंच गया, उसी वक्त हज़रत उमर पहुंच गए और कहने लगे ऐ अल्लाह के रसूल! यह अबू सुफियान हैं और अल्लाह ने मौका दे दिया है उनका खात्मा कर देने का, मुआहिदे की रुकावट भी अब नहीं, मुझे मौक़ा दीजिए मैं इनकी गर्दन उड़ाऊँ। मैंने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल मैंने इसको अपनी हिफ़ाज़त में ले लिया है, लेकिन हज़रत उमर ने बार बार अपनी बात कही तो मैंने उमर को सब्र करने के लिए कहा। हज़रत उमर ने कहा कि ऐ अब्बास! मैं तुमसे यह कह सकता हूँ कि तुम्हारा जो तअल्लुक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से है, उसकी बिना पर, तुम्हारा इस्लाम लाना मेरे बाप खत्ताब के इस्लाम लाने से ज़्यादा मुझको अज़ीज़ रहा है काश कि मेरा बाप भी मुसलमान हुआ होता और यह इसलिए कह रहा हूँ कि तुम्हारा इस्लाम लाना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मेरे बाप खत्ताब के इस्लाम लाने से ज़्यादा अज़ीज़ रहा

होगा, बहरहाल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मसले में जल्द फैसला करने में ताख़ीर मुनासिब समझते हुए यह फरमाया कि अब्बास इनको तुम ले जाओ और सुबह इनको ले आना तो देखेंगे चुनांचे मैंने ऐसा ही किया और सुबह होने पर उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास ले गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः अबू सुफियान क्या अभी वक्त नहीं आया कि तुम इस बात को मानो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है। अबू सुफियान ने कहा कि मेरे माँ–बाप आप पर फिदा हों आप बड़े नर्मदिल हैं, और बड़े शराफत वाले हैं और ख़ानदानी तअल्लुक़ का भी ख़्याल रखने वाले हैं बखुदा मैं यह तो समझ गया हूँ कि अगर अल्लाह के अलावा कोई और खुदा होता तो इस वक्त मेरे काम आया होता।

रसूलुल्लाह सल्लल्लांहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः अरे अबू सुफिरयान क्या अभी वक्त नहीं आया कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। अबू सुफियान ने कहाः मेरे माँ–बाप आप पर फिदा हों जितने ज़्यादा आप नर्मदिल और शरीफाना अख़लाक़ के हैं, और खानदानी तअल्लुक़ का भी बड़ा लिहाज़ करने वाले हैं। आपकी यह बात ऐसी है कि मेरे दिल में अब तक इसके सिलसिले में कुछ कमी है, इस पर हज़रत अब्बास फौरन बोले, अरे तुम्हारी खराबी हो इस्लाम कुबूल कर लो, कब्ल इसके कि कोई तुम्हारी गर्दन उड़ा दे। इस पर उन्होंने कलम–ए–शहादत पढ़ लिया और पढ़ कर मुसलमान हो गए और हज़रत अब्बास रज़ि0 ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि यह अबू सुफियान जो कि कुरैश के सरदार और सेनापति ऐसे आदमी हैं जो फख व इज़्ज़त के ख्वाहिशमंद रहते हैं, आप इनके लिए कुछ ऐसा भी कर दीजिए कि इनके दिल में अच्छा हो, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया यह ऐलान है कि जो अबू सुफियान के घर में अपने बचाव के लिए दाखिल हो जायेगा उसको अमान है इसी तरह जो अपनी हिफाज़त के लिए खुद अपने घर का दरवाज़ा बन्द कर लेगा वह भी अमान में है और जो बचाव के लिए मस्जिद में दाखिल हो जायेगा, उसको भी अमान है जब अबू सुफियान जाने लगे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्बास रज़ि0 से कहा कि इनको रास्ते के तंग हिस्से पर पहाड़ के ऊपर ज़रा खड़ा रखो, अल्लाह की फ़ौजें जब गुज़रेंगी यह उनको देख लें, मकसद यह था कि मुसलमान की अज़मत व बरतरी (उच्चता व महानता) अच्छी तरह उनको मालूम हो जाये, हज़रत अब्बास कहते हैं कि मैं निकला और अबू सुफियान को वहां पर रोका मुसलमानों की फ़ौजें अपने अपने क़बीलों के ऐतबार से अपने झण्डे लिए गुज़र रही थीं।

❖❖❖

ज़िक्रे अज़वाज व औलादे ख़ुलफाए राशदीन रज़ि0

पहले खलीफ़ा हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु-

आपकी चार अज़वाज से 6 औलाद हुईं, तीन बेटे तीन बेटियाँ–

1. पहली ज़ौजा हबीबा बिन्ते खारिजा अन्सारिया, इन से एक बेटी "उम्मे कुल्सूम" थीं।
2. दूसरी ज़ौजा अस्मा बिन्ते उमैस इन से एक बेटा मुहम्मद नाम का था।
3. तीसरी ज़ौजा उम्मे रुमान से ऐक बेटी आइशा उम्मुल मोमिनीन रज़ि0 और एक बेटा अब्दुर्रहमान रज़ि0 थे।
4. चौथी ज़ौजा क़तीला से एक बेटी अस्मा और एक बेटा अब्दुल्लाह थे।

अल्लाह तआला इन सब पर रहमत नाज़िल फरमाए।

दूसरे खलीफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु-

आपकी आठ ज़ौजात से नौ औलाद हुईं।

1. करीबा, 2. सबीआ
3. जमीला बिन्ते साबित
4. उम्मे हकीम बिन्ते हारिस
5. आतिका बिन्ते ज़ैद। इन सब से कोई औलाद न थी।
6. उम्मे कुल्सूम मलकिया इनसे एक बेटा उबैदुल्लाह था।
7. जैनब बिन्ते मज़ऊन, इनसे दो लड़के अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान अकबर हुए और एक लड़की हफ़्सा उम्मुल–मोमिनीन रज़ि0।
8. उम्मे कुल्सूम बिन्ते अली रज़ि0 इनसे तीन लड़के ज़ैद, आसिम और अयाज़ थे और दो लड़कियाँ रुकय्या और फातिमा थीं।

हज़रत उमर फारूक़ रज़ि0 के एक बेटे अबू शहमा थे जो एक बाँदी से थे।

तीसरे खलीफ़ा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु-

आपकी आठ अज़वाज से 15 औलादें हुईं; नौ बेटे और छे बेटियाँ।

1. रुकय्या रज़ि0 बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। इनसे एक साहिब जादे अब्दुल्लाह पैदा हुए थे जो बचपन ही में वफात पा गये थे।
2. उम्मे कुल्सूम बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। हज़रत रुकय्या के इन्तिकाल के बाद इनसे निकाह हुआ था इनसे कोई औलाद न थी।
3. फाख़ता बिन्ते ग़ज़वान, इनसे एक बेटा अब्दुल्लाह असगर था।
4. उम्मे अम्र बिन्ते जुन्दब, इनसे चार बेटे अम्र, खालिद, अबान और उमर हुए और एक बेटी मरयम हुई।
5. उम्मुल बनीन बिन्ते उयैना बिन हसन, इनसे एक बेटा अब्दुल मलिक था।
6. रमला बिन्ते शैबा, इनसे तीन बेटियाँ, आइशा, उम्मे अबान और उम्मे अम्र थीं।
7. नाइला बिन्ते फ़राफ़सा, इनसे एक बेटी मरयम सुगरा पैदा हुई।
8. फातिमा बिन्ते वलीद, इनसे दो बेटे, वलीद और सईद हुए नीज़ एक बेटी उम्मे सईद थी।

चौथे खलीफ़ा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु-

आपकी आठ अज़वाज से उन्तीस औलाद हुईं पन्द्रह बेटियाँ और चौदह बेटे लेकिन कुछ तारीख लिखने वालों ने ज़्यादा भी लिखा है।

1. हज़रत फातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। इनसे तीन बेटे, हज़रत हसन, हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा और मोहसिन (जो बचपन ही में वफात पा गये थे), दो बेटियाँ जैनब कुबरा और जैनब सुगरा (उम्मे कुल्सूम) थीं उम्मे कुल्सूम का निकाह हज़रत उमर रज़ि0 से हुआ था।

2. उम्मे सईद बिन्ते अरवा, इनसे दो बेटियाँ रमला कुबरा और उम्मुल हसन थीं।

3. खौला बिन्ते जाफर, इनसे एक बेटा मुहम्मद बिन हनफीया थे।

4. उमामा बिन्ते अबिल आस (यह हज़रत जैनब बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी हैं) इनसे एक बेटा मुहम्मद औसत हुआ था।

5. असमा बिन्ते उमेस, इनसे तीन बेटे हुए, औन, मुहम्मद असग़र और यहया।

6. उम्मे हबीबा बिन्ते ज़मआ, इनसे एक बेटा उमर और एक बेटी रुकय्या थीं।

7. लैला बिन्ते मसऊद, इनसे दो बेटे थे, अबू बक्र और उबैदुल्लाह।

8. उम्मुलबनीन बिन्ते हराम, इनसे चार बेटे हुए, अब्बास, जाफर, उस्मान, और अब्दुल्लाह, यह चारों करबला में शहीद हुए।

आपकी दस बेटियाँ जो बाँदियों से थीं वह यह हैं– उम्मे हानी, मैमूना, जैनब सुगरा, फातिमा, उमामा, खदीजा, उम्मुलकिराम, उम्मे जाफर, उम्मे सलमा, जुमाना।

पाँचवें खलीफ़ा हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु-

आपने मुतअद्दिद शादियां की जिनसे आठ बेटे और सात बेटियाँ हुईं। किताबों में सिर्फ तीन बीवियों के नाम मिल रहे हैं।

1. उम्मे बशीर, इनसे एक बेटा जैद और दो बेटियाँ उम्मुल हसन और उम्मुल हुसैन थीं।

2. खौला फज़ारिया, इनसे एक बेटा था, हसन मुसन्ना।

3. उम्मे इसहाक़ बिन्ते तलहा से दो बेटे एक बेटी थी, हसन असगर, तलहा और फातिमा।

4. चौथी बीवी से तीन बेटे थे, अम्र, कासिम और अब्दुल्लाह।

5. पाँचवीं ज़ौजा से सिर्फ एक बेटा था जिनका नाम अब्दुर्रहमान था।

इनके सिवा दूसरी बीवियों से चार बेटियों के नाम इस तरह हैं– उम्मे अब्दुल्लाह, फातिमा, सलमा और रुकय्या। इन सब पर अल्लाह की रहमत हो।

नोटः– हज़रत हसन की मालूमात शिओं की किताब तारीखे अइम्मा से ली गई।

❖❖❖

प्यारे नबी की शिक्षाऐं

—तहरीम मुशीर माहि

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है समाज में घटित होने वाली घटनायें उसको प्रतिदिन प्रभावित करती रहती हैं। यदि मनुष्य के आस पास का वातावरण प्रसन्नतापूर्ण है तो वह उस वातावरण में खुश दिखाई पड़ता है यदि इस के विपरीत दुखद वातावरण है तो वह दुखी दिखाई पड़ता है सुख और दुख मुख्यतः दोनो एक दूसरे के विपरीत होते हैं परन्तु जीवन में इनका होना या घटना भी एक प्राकृतिक नियम है जो अल्लाह द्वारा बनाया गया है। वह इसलिए कि अल्लाह अपने बन्दों की इस संसार में परीक्षा लेता है और जो मनुष्य इस परीक्षा को उत्तीर्ण कर लेता है वह ईश्वर का प्रिय बन जाता है।

यह संसार ईश्वर की बनाई हुई रचना है वह उसे जिस तरह चाहता है अपनी इच्छानुसार चलाता है। उसने पृथ्वी पर मानव को केवल और केवल अपनी इबादत करने के लिए उत्पन्न किया है और इसी मानव प्राणी में उसने दुनिया में नबी भेजे ताकि वह मनुष्यों को इबादत का सही मूल्य समझाएं और मनुष्यों को जीवन यापन की सच्ची राह बताएं और जीवन के सच्चे मूल्यों को अच्छी तरह समझाएं।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो कि हमारे नबी हैं उन्होंने स्वयं ईश्वरीय आदेशानुसार अपना जीवन व्यतीत किया और अल्लाह के आदेशानुसार अल्लाह के आदेशों को बन्दों तक पहुंचाया और लोगों को उन पर चला कर एक आदर्श समाज स्थापित किया जो चौदह सौ साल से लेकर अभी तक मुस्लिम समाज में स्थापित है और इंशाअल्लाह रहती दुनिया तक स्थापित रहेगा।

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना जीवन केवल और केवल ईश्वरीय आदेशानुसार व्यतीत किया और उनके इसी आदेश का अनुकरण हमारे सहाबा रज़ि0 ने भी किया और उसे नबी की सुन्नत का नाम दिया और सहाबा रज़ि0 ने लोगों को भी अनुसरण करने का आदेश दिया। सहाबा रज़ि0 को हमारे नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत महब्बत थी और वे उनके द्वारा किये गये कार्यों को अपने जीवन में अपना कर स्वयं के लिए सम्मान और प्रसन्नता की बात समझते थे।

मनुष्य जब संसार में जीवन व्यतीत करता है तो उसे सामाजिक स्तर पर सबसे पहले नियमों की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि इसके अभाव में मनुष्य की प्रगति और वृद्धि रुक जाती है उदाहरण स्वरूप हम किसी मदरसे (स्कूल) की स्थापना करते हैं तो सबसे पहले हम उसके नियमों को सामने रखते हैं और "मूल" उसका पैसा, भूमि, नीवं और मसाला, शिक्षक और शिष्य इत्यादि हैं "नियम" मदरसे का

संचालन समय की पाबन्दी, शिक्षक व शिष्य में आदर व सम्मान व प्रेम और अन्य सदस्यों के साथ अच्छा व्यवहार इत्यादि। ठीक इसी तरह समस्त मनुष्य को अपने जीवन का मूल्य समझना चाहिए और इस्लामी दृष्टिकोंण के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए जो नियम कुर्आन और हमारे नबी ने बतायें हैं। यदि हम उसका अपने जीवन में अनुसरण कर लेते हैं तो यह हमारे लिए दीन व दुनिया दोनों के दृष्टिकोंण से लाभदायक सिद्ध होगी।

हमारे नबी ने ऐसी ही कुछ शिक्षाऐं दी हैं जिसे अपना कर हम अपने जीवन में समृद्धि और प्रसन्नता ला सकते हैं। क्या कहती हैं नबी की शिक्षाऐं। आज नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षाओं पर लोग वैज्ञानिक दृष्टिकोंण से अध्ययन कर रहे हैं जो विज्ञान के मुताबिक सत्य हो रही हैं जो इस्लाम ने आज से कई सौ साल पहले ही दे दी थी उदाहरण स्वरूप मैंने ज्यादा तर लोगों को देखा है कि बड़े ही आराम से चलते फिरते खड़े हो कर या कभी कभी लेटे लेटे पानी पी लेते हैं। वह यह नहीं जानते की ऐसा करना उनके लिए कितना हानिकारक सिद्ध हो सकता है। हमारे नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह शिक्षा दी कि "पानी सदैव बैठकर पियो और उसको देख कर धीरे–धीरे पिया करो" विज्ञान भी आज यही शिक्षाऐं दे रहा है, विज्ञान यह कहता है कि खड़े होकर पानी पीने से पानी सीधे फेफड़े को पहुंचता है और उसे हानि पहुंचाता है और कभी कभी यह सीधे पेट और लीवर में पहुंच जाता है और पाचन व भीतरी क्रियाओं को अवरुद्ध करता है। यही नहीं खड़ें होकर पानी पीने से यह पैरों में सूजन उत्पन्न करता है। जिसका दुष्प्रभाव बाद में दिखाई पड़ता है। और देख कर पानी पीने को इसलिए कहा गया है कि अक्सर नल से जा पानी आता है कभी कभी उसमें कुछ कीट या पालीथीन का टुकड़ा या कोई अन्य वस्तु भी हो सकती है यदि आदमी देखकर पानी पीता है तो वह इन सब परेशानियों से बच सकता है। नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह शिक्षाऐं मनुष्य के स्वास्थ्य को बहुत अधिक लाभ पहुंचा सकती हैं यदि वह इन शिक्षाओं पर अमल करता है तो।

इसी तरह नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जीवन के हर क्षेत्र में शिक्षा दी। जिससे समाज के लोग सभ्य एवं संगठित हो कर जीवन व्यतीत कर सकें लेकिन आज के लोग उन शिक्षाओं पर अमल नहीं करना चाहते। कुछ तो आज्ञानता के कारण और कुछ अपने घमण्ड के कारण। घमण्ड इसलिए कि मुझसे बड़ा और दौलत मन्द कोई नहीं अब पड़ोसियों का ही अधिकार ले लीजिए।

इस्लाम ने पड़ोसियों का हम पर बहुत अधिकार बताया है स्वयं ध्यान देने योग्य यह बात है कि दुख हो या सुख हमारी विवशता और प्रसन्नता सबसे पहले उन्हीं के सामने प्रकट होती है। यह अलग

बात है कि हम अपनी बात स्वयं जा कर उसे नहीं बताते। फिर भी यदि हम सुख की बात छोड़ दें तो वह दुख में सदैव हम सबके साथ खड़े नजर आते हैं। हमारे प्रिय सगे सम्बन्धी से पहले हम तक पहुंचते हैं और हमें सहारा देते हैं। मगर आज स्वयं हम अपने मुहल्ले में देख लें। छोटी–छोटी बात पर लड़ाई झगड़े तो जैसे आम बात हो गई है। अब मुहल्ले की नालियों को ही ले लिजिए प्रतिदिन किसी न किसी पड़ोसी से इसे लेकर लड़ाईयां हो जाती हैं और इन लड़ईयों को महिलायें ही सबसे ज़्यादा लड़ती हैं, नौबत तो यहां तक पहुंच जाती है लाठी, चाकू और आज कल तो बन्दूक भी निकल जाती है और मुहल्ले तक पुलिस भी पहुँच जाती है और अब क्या दोनों पड़ोसियों में बोल चाल बन्द हो गई, सिर्फ एक छोटी सी बात पर वह यह कि तुम मेरे दरवाज़े से पानी मत बहाया करो या पानी बहाते हो तो नाली साफ भी किया करो? दोनों में कोई कम नहीं कि हम ही दब जायें ताकतवर यह समझता है कि हम धन के बल पर कुछ भी कर सकते हैं और कमज़ोर यह सोचता है कि हम गरीब है तो दब जायें क्यों? और बात बढ़ कर कहां से कहां चली जाती है।

एक मौके पर नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अपने भाई की मदद करो जालिम हो या मजलूम पूछा गया मजलूम की मदद तो स्पष्ट है जालिम की मदद कैसे करें? फरमाया अपने भाई जालिम की मदद यह है कि उसको जुल्म से रोक दें। नबी की शिक्षाऐं यह कहलाती हैं कि हमें अपने पड़ोसियों को मान और सम्मान देना चाहिए उनसे महब्बत से पेश आना चाहिए। यदि उनकी किसी बात से कष्ट है तो लड़ाई झगड़ा न करना चाहिए क्योंकि ईश्वर स्वयं लोगों को देख रहा है।

पड़ोसियों के अधिकार को बताते हुए नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह शिक्षा उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ि0 को दी कि "हज़रत जिब्रील ने मुझे पड़ोसियों के अधिकार की इतनी ताक़ीद की कि मैंने समझा की कहीं उनको वरासत का अधिकार न दिला दें।"

इस बात से यह स्पष्ट होता है कि इस्लाम ने पड़ोसियों को क्या–क्या अधिकार दिये हैं।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षायें इतनी अधिक हैं कि उन सबको एकत्र करना कठिन है परन्तु फिर भी कुछ महान लोगों ने उन शिक्षाओं को पुस्तकों में समाहित किया है और लोगों के सामने प्रस्तुत किया है। कहने का उद्देश्य यह है कि इन थोड़े शब्दों में नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दी हुई इतनी अधिक शिक्षाओं को बता पाना कठिन है परन्तु जिन शिक्षाओं को यहाँ प्रस्तुत किया गया है यदि हम उन पर अमल करते हैं तो यह हमारे और समाज दोनों के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। यह शिक्षाऐं हमारे व्यक्तिगत जीवन का सच्चा रही हैं।

❑❑

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

निकाह के अवसर पर संक्षिप्त भाषण और वैवाहिक स्वत्व का वर्णन[1]–

अब कुछ समय से बहुत से आलिम (धार्मिक विद्वान) खुत्बा अरबी में पढ़ने के बाद अर्थात नियमबद्ध अरबी में भाषण देने के पश्चात उर्दू में संक्षिप्त व्याख्यान देने लगे हैं, जिसमें निकाह की यथार्थता, कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्यों पर प्रकाश डालते हैं और इसका प्रयास किया जाता है कि यह रस्म मनोरंजन मात्र हो कर न रह जाये बल्कि इसमें दुल्हा तथा उपस्थित जनों को दीनी तथा नैतिक निर्देश मिलें और उनके अन्दर उत्तदायित्व की भावना जागृत हो।

यहाँ इसी अवसर पर दिये जाने वाले व्याख्यानों में से एक भाषण का नमूना प्रस्तुत किया जा रहा है जो एक निकाह की महफ़िल में टेप रिकार्ड कर लिया गया था और जो इस सुधारात्मक प्रणाली का बड़ी हद तक प्रदर्शन करता है।

(खुत्ब–ए–मसनूना[1] के बाद)

"अल्लाह तआला के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है, ऐ लोगों! अपने रब का डर रखों जिसने तुम्हें एक ही जीव से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से बहुत से पुरुषों और स्त्रियों को फैला दिया। और उस अल्लाह का डर रखो जिसके वास्ते से तुम एक दूसरे से सहायता चाहते हो, और रिश्तों तथा नातों को तोड़ने से डरो। निःसन्देह अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है। (कुर्आन मजीद–अन–निसा–1)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह का डर रखो जैसा कि उससे डर रखने का हक़ है, और मरो तो इस दशा में कि तुम मुस्लिम हो। (कुर्आन मजीद–आले इमराने, 102)

ऐ लोगो जो ईमान लाये हो! अल्लाह का डर रखो, और ठीक ठीक बात कहो, वह तुम्हारे कामों को सुधार देगा ,और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा। जो कोई अल्लाह और उसके रसूल का कहना माने उसने बड़ी सफलता प्राप्त की। (कुर्आन मजीद–अल–अहज़ाब 70,71)

सज्जनों! "निकाह" केवल रीति रिवाज़ की पाबन्दी अथवा भोग विलास की तृप्ति का साधन मात्र नहीं, निकाह की सुन्नत एक इबादत ही नहीं वरन् अनेक इबादतों का मिश्रण है। इससे एक धार्मिक आदेश नहीं, दर्जनों तथा बीसियों धार्मिक आदेश सम्बद्ध

1. विवाह पश्चात पुरुषों तथा स्त्रियों के एक दूसरे के प्रति पारस्परिक उत्तरदायित्वों का वर्णन।

1. भाषण के पूर्व यह वाक्य जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पवित्र मुख द्वारा उच्चारित किये गये अनु0।

हैं। इसका गौरवमयी स्थान कुर्आन मजीद में भी है और हदीस शरीफ़ में भी है और फिक़्ह[1] की किताबों में तो इस विषय से सम्बन्धित एक पूरा अध्याय है। परन्तु इस सुन्नत के प्रति जितनी आसावधानी बरती जाती है उतनी किसी दूसरी सुन्नत तथा फ़र्ज के प्रति नहीं, बल्कि इसको खुदा की अवज्ञा, काम भाव का अभियान, शैतान के आज्ञा पालन तथा रीति रिवाज के बन्धनों का क्षेत्र बना लिया गया है। इस सुन्नत में हमारे जीवन के प्रति सम्पूर्ण संदेश विद्यमान हैं, इसका अनुमान आप कुरआन मजीद की उन आयतों से लगा सकते हैं जिनका पढ़ना निकाह के खुत्बे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सिद्ध है जो आरम्भ में पढ़ी गई हैं। पहली आयत[2] में मानव जाति की उत्पत्ति का उल्लेख किया गया है जो ऐसी शुभ घड़ी पर यथोचित और शकुनात्मक है, कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का एक अकेला अस्तित्व था और एक धर्मपत्नी, जिनसे अल्लाह तआला ने मानव जाति की अभिवृद्ध कर धरती को भर दिया। अल्लाह तआला ने इन दो प्राणियों में ऐसा प्रेम और उनके साहचर्य में ऐसी बरकत प्रदान की कि आज संसार उसका साक्षी है, तो खुदा के लिए क्या मुश्किल है कि इन दो प्राणियों से जो आज मिल रहे हैं एक परिवार को आबाद तथा एक खानदान को शाद व बामुराद कर दे।

फिर फ़रमाता है, अपने परवरदिगार से शर्म करो जिसके नाम पर तुम एक दूसरे से सवाल करते हो।

सज्जनो! सम्पूर्ण जीवनचर्या निरन्तर तथा पूर्णरूपेण मांगने की प्रक्रिया है। व्यापार, शासन, राज्य एवं शिक्षा आदि सब एक प्रकार की मांगें हैं। इनमें एक वर्ग मांगने वाला तथा दूसरा देने वाला है। फिर हर भिखारी दाता तथा प्रत्येक दाता स्वयं भिखारी भी है। हम अपने समाज में गिरे से गिरे व्यक्ति से मांगने वाले हैं अतः प्रत्येक की आवश्यकतायें दूसरे से सम्बद्ध हैं, इससे कोई भी व्यक्ति बच नहीं सकता। यही भद्र एवं सभ्य जीवन की विशेषता है। यह निकाह तथा शादी क्या है? यह एक प्रकार की सभ्य एवं शुभ रूपी मांग है। एक सभ्य एवं शिष्ट परिवार ने एक दूसरे शरीफ़ खानदान से मांग की कि हमारे सुपुत्र को एक जीवन संगनी की आवश्यकता है, उसका जीवन नीरस तथा अपूर्ण है अतः उसकी परिपुष्टि कीजिए। दूसरे परिवार ने इस मांग को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया। फिर वह दोनों खुदा का नाम बीच में लाकर एक दूसरे से मिल गये। दो आत्माएं जो कल तक एक दूसरे से अनभिज्ञ तथा अपरिचित थीं और सबसे अधिक दूर थीं वे एक दूसरे से निकट तथा सम्बद्ध हो गईं कि उनसे बढ़कर निकटता तथा सम्बद्धता का अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। एक का भाग्य दूसरे से संगठित और एक की प्रसन्नता एवं प्रफुल्लता दूसरे

1. धर्म नियम सम्बन्धी शास्त्र (अनु0)
2. कुरआन मजीद का पूर्ण वाक्य (अनु0)

पर आधारित। यह सब उस सर्वशक्तिमान के नाम का चमत्कार है जिसने अवैध को वैध, अवर्जित को वर्जित तथा अनवधान एवं पाप को शक्ति तथा उपासना का रूप प्रदान कर दिया और जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन बर्पा कर दिया। अल्लाह तआला फरमाता है कि अब इस नाम की लाज रखना। अति स्वार्थता की बात होगी कि तुम इस नाम को बीच में ला कर अपने स्वार्थ की पूर्ति कर लो और काम निकाल लो, फिर इस महिमा शाली नाम को एक दम भूल जाओ और जीवन में उसके द्वारा लागू किये उत्तरदायित्वों की पूर्ति न करो, भविष्य में भी इस नाम को याद तथा इसकी लाज रखना, फिर फ़रमाया कि हाँ नाते रिश्तों का भी ध यान रखना। "और अल्लाह का डर रखो जिसके वास्ते से तुम एक दूसरे से सहायता चाहते हो। और रिश्तों तथा नातों को तोड़ने से डरो"।

आज एक नया रिश्ता हो रहा है, अतः आवश्यकता पड़ी की पुराने रिश्तों का भी उल्लेख कर दिया जाय, कि इस नवीनतम रिश्ते से पुरानी नातेदारियों की परम्परायें तथा उनके प्रति उत्तरदायित्व समाप्त नहीं हो जाते, ऐसा न हो कि स्त्री के रिश्ते को याद रखो और माँ के रिश्ते को भूल जाओ, ससुर की सेवा आवश्यक समझो और अपने बाप से मुँह ोड़ लो। यदि किसी के मन में ऐसा विचार उत्पन्न हो जाय कि इन बातों की कौन देख रेख करेगा और कौन हर समय साथ लगा रहेगा, तो फ़रमाया कि "निस्सन्देह अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है।" अल्लाह इस पर नियंत्रक है, यह वह गवाह है जो हर समय साथ रहेगा।

"हम उनकी शह्रग से भी अधिक निकट हैं।"

दूसरी आयत में एक कटु परन्तु आवश्यंभावी वास्तविकता को याद दिलाया गया है, यह खुदा के पैग़म्बर ही की शान है कि हर्ष एवं उल्लास से ओत प्रोत समारोह में ऐसे कटु यथार्थ का उल्लेख करे, जिससे मानव अपने परिणाम से अचेत न होने पाये, और उस माया की ओर ध्यान रखे जो साथ जाने वाली और सदैव साथ रहने वाली है, अर्थात ईमान की पूंजी। फ़रमाया कि यह ज़िन्दगी कितनी ही प्रतिभावान, आनन्दमय एवं दीर्घ कालीन हो, इसकी चिन्ता रखना कि इसका अन्त अपने मालिक तथा पैदा करने वाले की आज्ञा पालन में और ईमान–व–यक़ीन पर हो। यही वह तथ्य है, जिसको संसार के एक सफलतापूर्ण व्यक्ति, जिसको अल्लाह तआला ने प्रधानता एवं उत्तमता, सम्पत्ति एवं अधिपत्य, मान मर्यादा, सौन्दर्य तथा हर प्रकार के वैभव से सम्पन्न किया था, उच्चतम शिखर पर पहुंचने के बाद भी न भूलने पाया। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की वह दुआ याद कीजिये जो उन्होंने, अपने युग में चरम सीमा एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने की अवस्था में, की। उनके शब्द थे "ऐ मेरे पालन हार तूने मुझे सत्ता प्रदान की, और मुझको बातों की तह तक पहुंचना सिखाया,

शेष पृष्ठ.....36 पर

हम अपना खुद जाइज़ा लें

—मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद ज़हूर नदवी

दुनिया की सारी चीज़ों में एक तो ज़ात है, यानी अस्ल है दूसरी चीज़ उसकी सिफत (गुण) है, कैफीयत है, तासीर है मसलन सोना चाँदी ही को ले लीजिए एक तो बहैसीयत अपनी अस्ल के वह धात है, यह तो उनकी अस्ल है अब उन की सिफ़ात को सामने रखिए कि सोना चांदी को हमने सिक्कों में ढाल लिया और उन को ज़रे मुबादला के तौर पर इस्तेमाल करने लगे अब सोना चांदी सिक्कों में तब्दील हो गया है उससे दूसरे फाइदे हासिल होने लगे, अगर हमारे पास यह सिक्के हैं तो हम को उन से ग़ल्ला भी मिल जाएगा अगर कपड़े की ज़रूरत हो तो पहनने के लिए कपड़े हासिल हो जाएंगे, कहीं सफर करना हो तो हम को सफर की सारी सहूलतें मुयस्सर हो सकती हैं। यह सब सोने चांदी की सिफात हुईं, जो फाइदा हम उठा रहे हैं उन की सिफात से फाइदा उठा रहे हैं न कि उनकी अस्ल ज़ात से इसी तरह पानी को ले लीजिए एक तो उसकी अस्ल है जो सय्याल है दूसरे उसकी सिफत है कि उसके पी लेने से प्यास जाती रहती है, कपड़ा धो लेने से उसकी गन्दगी और मैल दूर हो जाती है, पौधों और बागों में पानी दे दिया जाय तो सर सब्ज़ व शादाब हो जाते हैं यह सब उसकी सिफात हैं।

इसी तरह मिसाल के तौर पर कपड़े को लीजिए एक तो उसकी अस्ल यानी रूई हुई, दूसरे उसकी सिफत है यानी उसके इस्तेमाल से सर्दी व गर्मी से हिफ़ाज़त होती है। उससे बने कपड़े के इस्तेमाल से इन्सान मुहज्ज़ब व शाइस्ता नज़र आता है, सोसाइटी में जगह पाने के काबिल होता है। यह बस उसकी सिफात हुई हर चीज़ की क़ीमत उसकी सिफ़ात के मुताबिक़ होती है अगर उसकी सिफात गूनागूं है, बहुत ऊँची किस्म की है तो उसकी क़द्र व कीमत भी ऊँची होगी। और अगर उसकी सिफात बहुत नुक्सान वाली हैं तो उसकी क़द्र व कीमत भी वैसी ही होगी। किसी चीज़ की सिफात जिस कद्र आला व अरफा (ऊँची) होंगी उसके मुताबिक उसकी क़द्र होगी, उसकी बक़ा का सामान किया जाएगा, अगर सोने व चाँदी ज़रे मुबादला बन कर खास अहमीयत के हामिल हो गये हैं तो अस्ल सोना व चाँदी के हुसूल व याफत की कोशिश भी बढ़ जाएगी उनकी हिफाज़त और बक़ा की फिक्र भी दामनगीर होगी। अगर पानी की सिफात आला व अरफा बाकी हैं तो पानी की अस्ल की अहमीयत बढ़ जाती है, अस्ल माद्दा (पानी) को तलाश किया जाता है उसकी हिफ़ाज़त की जाती है, चशमों से निकाला जाता है कुओं से खींचा जाता है, उसकी बका के लिए कोशिश की जाती है। बरतनों, टंकियों और हौज़ों में बाकी रखा

जाता है। अगर रूई की सिफात ऊँची है तो रूई की काश्त की जाती है उसको बाहर से मंगवाया जाता है, उसको बारिश और नुक्सान देने वाली चीज़ों से बचाया जाता है, उसके बक़ा की कोशिश की जाती है वगैरह।

मर्दे मोमिन अपनी ज़ात के एतिबार से गोश्त व खून का मजमूआ़ है, हड्डियों और आसाब का जाल है। अपनी अस्ल और माद्दे के एतिबार से वह कोई ज़्यादा काबिले क़द्र नहीं बल्कि अपनी सिफात, तासीरात और कैफीयात के लिहाज़ से आला व अरफा है। कुर्आन मजीद ने इसे यूं बयान किया है। "क़सम है ज़माने की इन्सान घाटे में है सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे काम किये" अगर मोमिन में यह सिफात व कैफियात पैदा हो गई हैं जिसकी दावत अंबिया अलैहिमुस्सलाम ले कर आए हैं तो वह निहायत आला व अरफा हैं और उसके बर अक्स (विपरीत) सिफात उसमें आ गई हैं तो वह निहायत पस्त व ग़लीज़ हैं। अगर अंबिया अलैहिमुस्सलाम की दावत वाली सिफात किसी फर्द या जमाअ़त या कौम व मिल्लत में पैदा हैं तो वह आला व अरफा हैं, उसकी हिफाज़त होगी उसके बक़ा व वजूद की जमानत है और अगर इन सिफात के बर अक्स सिफात हुई तो हिकमत का तकाज़ा और फितरत का कानून है कि उसके वजूद को खत्म किया जाए, मिटा दिया जाए। पानी जब प्यास बुझाने के बजाए प्यास पैदा करे, गन्दगी दूर करने के बजाए गन्दगी पैदा करे, बाग़ों, दरख़्तों को सर सब्ज़ करने के बजाए उनको झुलसा दे तो क्या वह पानी फेंक नहीं दिया जाएगा? पानी जब ज़हरीला हो जाए। उसमें नुक़सान पहुंचाने वाले जरासीम हो जाएं तो उसका रखना बीमारियों को पालना है वह जितनी जल्द फेंका जाए उतना ही बेहतर है। हम अल्लाह की ज़मीन पर सारी नेमतों से फ़ाइदा उठाएं उन नेमतों का शुक्र अल्लाह की ना फरमानी से अदा करे, नाफरमानियां ही नहीं उसके ग़ज़ब को चैलंज करें, एलान के साथ खुल्लम खुल्ला बग़ावत करें फिर उम्मीद रखें कि हम को मुआफ कर दिया जाएगा और हमारे वजूद व बक़ा की जमानत होगी सख्त तअ़ज्जुब की बात है याद रखना चाहिए कि अल्लाह के बाग़ी (या किसी बादशाह के बाग़ी) को पनाह नहीं है। हमारी ज़िन्दगी बाग़याना है। इल्ला माशा अल्लाह! हम अपने गरेबान में मुंह डाल कर देखें कि हम किस हाल में हैं? किसी के लिखने या वाज़ ब्यान करने या नसीहत करने की कोई ज़रूरत नहीं हम अपना खुद जाइज़ा लें, हमारे इम्तिहान का परचा और इम्तिहान की कापी हमारे हाथ में है, हम अपना नम्बर खुद दे कर नतीजा देख लें। वाज़ेह रहे कि यह बात मुसलमानों से कही गई है, मुसलमानों को चाहिए कि अपना मुहासबा करें और काफ़िरों को न देखें कि उनको तो छूट मिली हुई है वह आख़िरत में महरूम रहेगें।

❖❖❖

दाख़िली दुश्मन ख़ारिजी दुश्मन से ज़्यादा ख़तरनाक

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी

उमूमन इन्सान की यह आदत और ख़सलत रही है कि वह अपने दुश्मन को अपने वजूद के बाहर की दुनिया में तलाश करता है और उसे अपने अन्दरून में मौजूद और अपने सर पर सवार रहने वाला ख़तरनाक़ दुश्मन नज़र नहीं आता, यक़ीनन शैतान इन्सान का खुला हुआ दुश्मन है जैसा कि इरशादे बारी है अनुवादः ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे के पूरे दाखिल हो जाओ और शैतान के कदमों के पीछे मत चलो (यानी शैतान की पैरवी न करो) क्योंकि वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। (अल बक़रह :168)

दूसरी जगह इरशाद है अनुवादः शैतान तो इन्सान का खुला हुआ दुशन है (यूसुफः 5) चूंकि शैतान न दिखने वाली मख़लूक है इसलिए हकीकतन उसका कोई ज़ाहिरी और महसूस वजूद नहीं है बल्कि वह तो इस कदर लतीफ है कि इन्सान के खून में दौड़ता है और उसके हर तरह के बुरे कामों को बना संवार कर उसके सामने पेश करता है और कुफ्र व शिर्क और इन्सानी आदाब के क़वानीन की खिलाफ वर्जी करने पर आमादा करता है बेचारा इन्सान उसके हुक्म का इत्तिबाअ करके नाफरमान बन्दा बन जाता है और गुनाहों और मुनकरात में लत पत हो जाता है मगर यही शैतान कियामत के दिन इन्सान से दस्तबरदार हो जाएगा और कहेगा मैं तुम से बरी हूँ मैं तो अल्लाह रब्बुल आलमीन से डरता हूँ। (हश्रः 16)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "शैतान तो इन्सान की रगों में खून की तरह दौड़ता है।"

(बुख़ारीः 25–35)।

कुछ ऐसा ही मुआमला इबलीस का इन्सान के साथ है जो उसे नाफरमानियों पर उभारता है, माल व ज़र और जाह व मन्सब का लालच दिलाता है फिर उसे हक़ की राह से फिसला देता है और जब वह उस के धोखे में आकर उसके लालच में फंस जाता है और जब उसके झूठे वादों पर भरोसा कर लेता है तो उसे बेयार व मददगार छोड़ देता है यही चीज़ उसमें सब्र व सबात ईमान व यकीन और सिराते मुस्तकीम इख़्तियार करने के खिलाफ शदीद रद्देअमल पैदा कर देती है, ऐसे मौके पर वह इस बात की परवाह नहीं करता कि वह जानवरों की तरह खाता पीता है, शैतानों की मानिन्द खुशी से इतराता फिरता है और फिर वह इतना बेराह हो जाता है जिसे कुर्आन ने यूं बयान किया है अनुवादः "उनके दिल ऐसे हैं जो दिल से नहीं समझते और उनकी ऐसी आँखें हैं जिन से नहीं देखते, और उनके कान ऐसे हैं जिनसे नहीं सुनते यह लोग चौपाओं की तरह बल्कि यह उनसे भी ज़्यादा गुमराह हैं यही लोग

गाफिल हैं (आराफः 179) यानी उनमें हक़ समझने और हक इख़्तियार करने की सलाहियत खत्म हो जाती है।

इन्सानों की इस जमाअत पर जो तारीख के हर दौर में रही है सातवीं सदी हिज्री के एक बड़े आलिम और आरिफ बिल्लाह शैख़ जलालुद्दीन रूमी का यह कौल सादिक आता है जो उन्होंने पस्ती में जा गिरे इन्सानों के तअल्लुक से फरमाया थाः "वह इन्सानों की सी शक्ल व शबाहत रखने वाले हैं मगर वह इन्सान नहीं बल्कि नफ़्स के गुलाम और शहवतों के पुजारी हैं, वह पेट पालने वाले शहवत में जानवरों जैसी आदत के रस्या हैं यही वह लोग हैं जिन पर रोटी की हुकूमत चलती है और शहवतों ने उन के ज़मीर को मुर्दा कर दिया है।"

मौलाना रूमी ने अपने दीवान में इसी तअल्लुक से एक लतीफ़ वाकिआ नक़्ल किया है वह फरमाते हैं "बीती रात मैं ने एक बूढे शख्स को मशअल लिए शहर का चक्कर लगाते हुए देखा जैसे उसे किसी चीज़ की तलाश हो मैंने पूछा जनाब आप क्या ढून्ढ़ रहे हैं? उसने कहा मैं दरिन्दों और चौपाओं की जिन्दगी से उक्ता गया हूँ और तंग आ चुका हूं मैं एक अजीम, जरी, शेर जैसे इन्सान की तलाश में हूँ मेरा दिल उन काहिलों और बौनों से तंग आ गया है जिन्हें मैं अपने इर्द गिर्द पाता हूँ, मैंने कहा जिस को आप तलाश कर रहे हैं उसे पाना मुश्किल है क्यों कि मैंने खुद उसे एक अर्से तक तलाश किया लेकिन कामयाब न हो सका उसने कहा मैं ऐसी ही चीज़ की तलाश करने का शैदाई हूँ जो आसानी से हासिल न होती हो।

इस वाकिये से अगर सातवीं सदी हिज्री की इन्सानी सूरते हाल की तस्वीर कशी होती है तो पन्द्रहवीं सदी हिज्री के मुतअल्लिक़ आप का क्या खयाल है? जब कि इन्सान ने अख़लाक़ी कद्रो को फरामोश कर दिया यानी वह अच्छे स्वभाव छोड़ चुका है और शैतान अपनी तमाम चालों के साथ इन्सान के दिल व दिमाग़ पर छा गया है और भलाई और फरमाँ बरदारी और एहसान शनासी के उन तमाम रास्तों को बन्द कर दिया है जिनसे इस्लाम ने हम को रूशनास कराया था और हमें बुरी सोच और अख़लाक़ी बीमारियों से निकाला था, और हमें उन लोगों की सफ़ में ला खड़ा किया था जिन्होंने ईमान व अक़ीदा और इताअ़त व फरमाँबरदारी की एक उम्दा मिसाल काइम की और आलमे इन्सानियत को जिन्दगी के इन्सानी तरीक़े से नवाज़ा और उनको एहतिरामे नफ़्स, सआदत, इन्सानियत और उस अज़ीम अमानत के आला मकासिद की एक नई दुनिया तश्कील देने की तौफ़ीक मिली जिसको अल्लाह ने आसमान व ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश किया लेकिन उन्होंने उसकी अज़मत की वजह से यह जिम्मेदारी क़बूल करने से इन्कार कर दिया और माज़िरत (आपत्ति) पेश कर दी, इन्सान ही उस अमानत को उठाने का ज़्यादा हक़दार था लिहाज़ा उसने अल्लाह तआला के महज़ एक

इशारे पर उस अमानत की जिम्मेदारी को अपने सर ले लिया और उसकी वजह से मुस्तक़्बिल से ग़ाफिल और अंजाम से बेखबर रहा, गोया यह उस ज़िम्मेदारी की अज़मत से नावाकिफ था और उसे क़बूल करके खुद पर जुल्म किया यानी अपने ऊपर भारी बोझ लाद लिया, इरशादे बारी तआला है अनुवादः "हमने अपनी अमानत को आसमानों पर ज़मीन पर और पहाड़ों पर पेश किया लेकिन सबने उसके उठाने से इन्कार कर दिया और डर गये मगर इन्सान ने उसे उठा लिया वह बड़ा निडर और नादान है।" (अहजाबः 72)।

यहीं से दो किस्म के इन्सान की तस्वीर नज़र आती है, एक वह शख़्स है जो अपने अन्दर के दुश्मन को परवरिश करता है उसे अच्छी गिज़ा फराहम करता है उसे ताक़तवर बनाता है और उसे इसका एहसास तक नहीं होता, कि उसका दुश्मन खुद उसके अन्दर जगह बनाए हुए है, जहाँ से वह उसके तमाम आसाब पर छा जाता है लिहाज़ा उससे सादिर होने वाला हर अमल उसी दुश्मन के वसवसे का नतीजा हुआ करता है और दूसरा शख़्स वह है जो जानता है कि शैतान को अपनी सरगर्मियों में बड़ी चाबुक दस्ती और महारत हासिल है वही बुन्यादी फराइज़ और इस्लाम की मुकर्रर की हुई हदों की पामाली के रास्ते को हमवार करता है उसके नतीजे में फराइज़ की अदायगी में कोताही, इकरामे मुस्लिम से लापरवाही, हुकूक़ की पामाली की शक्ल में नज़र आता है और इन्सान को हर तरह की बुराई में मुब्तला कर देता है जिससे इन्सान का रास्ता ईमान व अकीदा, ताक़त व फरमां बरदारी और खैर व भलाई के मुकाबले में नफ़्स की चाहतों से ज़्यादा क़रीब हो जाता है लिहाज़ा लोग उसकी बुराइयों से महफूज़ नहीं रहते हैं चुनांचि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "हक़ीक़ी मुसलमान वह है जिस की ज़बान और उसके हाथ से दूसरे मुसलमान महफूज़ रहें और हक़ीक़ी मुहाजिर वह है जो बुरे कामों से दूर रहे और फरमाया जो दुनिया में दो रुख़ा होगा क़ियामत में उसकी आग की दो ज़बानें होंगी, एक दफा का वाकिआ है कि एक मोटे ताज़े आदमी का आपके पास से गुज़र हुआ, आपने फरमाया कि यह उन्हीं में है और एक दूसरी हदीस में वारिद हुआ है मुनाफिक़ की तीन अलामतें हैं जब बात करे तो झूट बोले, और जब वादा करे तो वादा ख़िलाफ़ी करे और जब उसके पास अमानत रखी जाए तो खियानत करे, मज़ीद एक चौथी अलामत है कि जब झगड़ा करे तो गाली दे।

मुसलमानों की ज़िन्दगी और मुआशरे का सरसरी तौर पर जाइज़ा लेने से यह बात वाज़ेह हो जाती है कि वह किन बुराइयों में मुब्तला हैं। यह सिर्फ अवाम के साथ नहीं बल्कि उलमा भी इसमें मुब्तला हैं। उनके अन्दर बहुत से अख़्लाक़ी अमराज़ पैदा हो गये हैं इस बीमारी के नतीजे में आज मुसलमान जिस इख़्तिलाफ व अदावत और गिरोह बन्दी का शिकार हैं

वही बहुत है लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती बल्कि यहां तक पहुंच गई है कि ईमानी भाई चारा भी बाक़ी नहीं रहा, हर शख़्स एक दूसरे से बिला किसी शरई जवाज़ के महज़ बुग्ज़ व हसद की बुनियाद पर इख़्तिलाफ करता है और यह इख़्तिलाफ इतना शदीद होता है कि पहले तो रंजिश और कशा कशी का सबब बनता है फिर दोनों के दर्मियान एक गहरी रंजिश पैदा कर देता है और यह तफ़रीक़ (जुदाई) आखिरी दर्जे को पहुंच जाती है और न खत्म होने वाले समाजी रोगों को जन्म देती है और हमारे समाज में यह सब कुछ पाया जाता है जिसकी वजह से उम्मते मुस्लिमा को आज तरह तरह की जिल्लत व रुस्वाई का सामना करना पड़ रहा है।

हमारी तमन्ना है कि मुसलमानों के ख्वास के बीच एक पुख्ता और मजबूत वहदत पैदा हो जाए फिर उसका असर आम मुसलमानों की तरफ मुन्तकिल हो उसके बाद उन लोगों तक पहुंचे जो इस्लाम को पसन्दीदगी की नज़र से देखते हैं और सूरते हाल का तकाज़ा भी यही है कि हम अपने तमाम अक्वाल व अफआल का एक बुलन्द व बेहतरीन नमूना पेश करें जिसे देखने के लिए लोग बेचैनी से इन्तिज़ार कर हरे हैं।

"ऐ ईमान वालो तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं और तुम जो करते नहीं उसका कहना अल्लाह तआला को सख़्त ना पसन्द है।

(सफ्फः 3)

तबक़–ए–ख़्वास में बाज ऐसे भी हैं जिन की अख़लाक़ी तरबीयत नहीं हो सकी और दीनी तालीम का वाफिर हिस्सा नहीं मिला जिस का नतीजा यह हुआ कि उनकी परवरिश आजादाना तौर पर हुई और अख़लाक़ी कद्रो में पुख़्तगी हासिल न हो सकी और ज़िन्दगी में एक मुसलमान की जिम्मेदारियों को वह न समझ सके लिहाज़ा यह तबका बिला किसी वजहे जायंज़ के गैज़ व ग़जब की आग में जल रहा है इस्लामी आदाब व अख़्लाक़ पर मुशतइल है और आला अ़कदार व रिवायात को मलयामेट कर रहा है और मुआ़शरे में खाराबियों का सबब और उसका तख़रीबी उन्सुर बन गया है जैसा कि बहुत सी जगहों में ऐसी मिसाल मौजूद है कि लोग अल्लाह की खुशनूदी हासिल करने वाला कोई अमल नहीं कर पाते, दर हक़ीकत उनके जमीर मर चुके हैं या उन्होंने चन्द सिक्कों और ठेकरों के बदले उसे बेच दिया है और आखिरत की फिक्र और अल्लाह के सामने हिसाब व किताब का तसव्वुर उनके दिलों से खत्म हो गया है। अल्लाह तआ़ला ने फरमाया "वह समझते हैं कि बहुत अच्छा कर रहे हैं।

(कहफः 103)

और फरमाया "काफिर आपस में एक दूसरे के रफीक़ हैं अगर तुमने ऐसा न किया तो मुल्क में फित्ना होगा और ज़बरदस्त फसाद बरपा हो जाएगा। (अनफालः 73)

तो क्या इस मुहलिक मर्ज का कोई इलाज है? या फिर इसे यूं ही छोड़ दिया जाए कि पूरा इन्सानी मुआशरा इसका शिकार हो जाए।

ऐ ईमान वालो उन लोगों जैसे न बन जाओ जिन्होंने मूसा अ0 को तक्लीफ दी पस जो बात उन्होंने कही थी (यानी जो ऐब निकाला था) अल्लाह ने उन्हें उससे बरी फरमा दिया और वह अल्लाह के नज़दीक़ बा इज्ज़त थे। (अहजाबः 69)

❖❖❖

दोनों जहां की .....

इन्सानों और जिनों के लिए जो दूसरी दायमी (हमेशा की) जिन्दगी बनाई है उसमें सुख उसी को मिलेगा जो उसकी हिदायत पर जो उसने अपने नबियों के ज़रिए भेजी हैं उन पर अमल करने वालों में से होगा, और जो उसकी ना फरमानी करेगा यानी उसके नबी की पैरवी न करेगा वह उस हमेशा की जिन्दगी में दुख झेलेगा अल्लाह तआला उस दुख से बचाए वहां का दुख जहन्नम की आग है इसीलिए दुआ में सिखाया गया कि कहो ऐ अल्लाह हम को आग से बचा ले, आख़िरत की भलाई तो वाज़ेह (स्पष्ट) हो गई कि आखिरत में अल्लाह की रजा (प्रसन्नता) और उसका इनआम जन्नत मिले।

दुनिया की भलाई से क्या समझना चाहिए? आमतौर से यही समझ में आता है कि इस दुनिया में सिहत मिले, अच्छी बीवी मिले, औरत को अच्छा शौहर (पति) मिले, ताबेदार सिहत मन्द औलाद मिले, रहने को अच्छा मकान मिले, अच्छी आमदनी का ज़रिया हो ताकि अच्छा खाने, अच्छा पहनने को मिले, अच्छा मकान हो और दूसरी सुहूलतें हों। लेकिन हम गौर करें तो यह सुहूलतें तो अनगिनत उन लोगो को भी हासिल हैं जो ईमान भी नहीं रखते बल्कि उनको भी मिली जिन्होंने खुदाई का दावा किया जैसे नमरूद, फिरऔन वगैरह तो यह जानना चाहिए कि यह दुनिया है दुनिया की भलाई नहीं है। दुनिया की भलाई सिर्फ साहिबे ईमान को मिलती है ईमान वाले को तंगी में जितनी दुनिया मिली वह खैर है भलाई और खुशहाली में दुनिया से जो कुछ मिला वह खैर है ईमान के साथ सिहत मिली तो खैर है, बीमारी मिली तो खैर है, औलाद मिली तब भी ख़ैर है, औलाद न मिली तब भी ख़ैर है ईमान के साथ अल्लाह तआला जो अता फ़रमा दें वह खैर है।

इस्लाम में जुह्द व क़िनाअत को पसन्द किया है लेकिन रहबानीयत (सन्यास) से रोका है। अल्लाह तआला ईमान के साथ दौलत दें, मन्सब दें, हुकूमत दें हम उस का हक़ अदा करें। तो यह सब दुनिया की भलाइयां हैं, तंगी व उसरत की ज़िन्दगी दे (जब की ईमान की दौलत साथ हो) उसका शुक्र अदा करें कि यह भी दुनिया की भलाई है और बराबर दुआ करते रहें "रब्बना आतिना फिद्दुनिया हसनतंव्व फिल आखिरति हसनतंव्व वकिना अज़ाबन्नार" या रब हम को दोनो जहां की भलाइयां अता फरमा व सल्लल्लाहु अला नबीयिल करीम।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः शफ़ाअत से क्या मतलब है?

उत्तरः शफ़ाअत सिफ़ारिश को कहते हैं। क़यामत के दिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुदा तआला के सामने गुनाहगार बन्दों की सिफ़ारिश करेंगे। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़ज़ीलत अता हो चुकी है। लेकन फिर भी खुदा तआला के जलाल व जबरूत के अदब से हुजूर भी शफ़ाअत की इज़ाज़त मांगेंगे। जब इजाज़त मिलेगी तो शफ़ाअत फ़रमायेंगे।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अलावा और नबी, औलिया और शहीद वग़ैरह भी शफ़ाअत करेंगे लेकिन बिना इजाज़त कोई शख़्स शफ़ाअत न कर सकेगा।

प्रश्नः किस तरह के गुनाहों की मुआफ़ी के लिए शफ़ाअत होगी?

उत्तरः कुफ़्र और शिर्क के अलावा बाक़ी सारे गुनाहों की मुआफ़ी के लिए शफ़ाअत हो सकती है। कबीरा गुनाहों वाले शफ़ाअत के ज़्यादा मोहताज होंगे क्योंकि सग़ीरा गुनाह तो दुनिया में भी इबादतों से मुआफ़ होते रहते हैं।

प्रश्नः ईमान किसे कहते हैं?

उत्तरः ईमान उसे कहते हैं कि– खुदा तआला, उसकी सारी सिफ़तों और फरिश्तों, आसमानी किताबों और पैग़म्बरों की दिल से तस्दीक़ करे (सच जाने) कियामत के दिन को माने, तक़दीर को माने कि अच्छी हो या बुरी वह अल्लाह की तरफ से है, और जो बातें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुदा की तरफ से लाये हैं उनको सच्चा समझे और ज़बान से उन सारी बातों का इक़रार करे। यही तस्दीक़ और इक़रार ईमान की हक़ीक़त है लेकिन इक़रार किसी ज़रूरत या मजबूरी के वक़्त साक़ित हो जाता है जैसे गूंगे आदमी का ईमान ज़ुबानी इक़रार के बग़ैर भी मोतबर है।

प्रश्नः आमाले सालेहा किसे कहते हैं?

उत्तरः आमाले सालेहा के माने हैं "नेक काम" जो इबादतें और नेक काम खुदा तआला और उसके पैग़म्बरों ने मख़्लूक़ को सिखाये हैं और बताये हैं वे सब आमाले सालेहा कहलाते हैं।

प्रश्नः क्या इबादतें और नेक काम भी ईमान की हक़ीक़त में दाख़िल हैं?

उत्तरः हाँ! ईमान. कामिल में आमाले सालेहा दाख़िल हैं। आमाले सालेहा से ईमान में रौशनी और कमाल पैदा हो जाता है और आमाले सालेहा न हों तो ईमान नाक़िस रहता है।

प्रश्नः इबादत के क्या माने हैं?

उत्तरः इबादत बन्दगी करने को कहते हैं। जो बन्दगी करे उसे आबिद और जिसकी बन्दगी करे उसे माबूद कहते हैं। हमारा सबका सच्चा और हक़ीक़ी माबूद वही एक खुदा है जिसने हमें और सारी

दुनिया को पैदा किया है। और हम सब उसके बन्दे हैं। उसने हमें अपनी इबादत का हुक्म दिया है इसलिए हमारे ज़िम्मे इबादत करना फ़र्ज़ है।

प्रश्नः खुदा तआला ने अपनी मख़लूक़ में से किस–किस मख़लूक़ को इबादत का हुक्म दिया है?

उत्तरः आदमियों और जिनों को इबादत करने का हुक्म दिया गया है। इन्हीं दोनों को मुकल्लफ़ कहते हैं फ़रिश्ते और दुनिया के बाक़ी जानदार इबादत के मुकल्लफ़ नहीं हैं।

प्रश्नः जिन कौन हैं?

उत्तरः जिन भी खुदा तआला की एक बड़ी मखलूक़ है। जो आग से पैदा हुई है। जिनों के जिस्म ऐसे लतीफ़ हैं कि हमें नज़र नहीं आते लेकिन जब वे किसी आदमी या जानवर की शक्ल में हो जाते हैं तो नज़र आने लगते हैं। अपनी शक्ल बदलने और आदमियों और जानवरों की सूरत में हो जाने की ख़ुदा ने उन्हें ताक़त दी हैं उनमें मर्द भी हैं और औरतें भी। उनकी औलाद भी होती है।

प्रश्नः इबादत करने का क्या तरीक़ा है?

उत्तरः इबादत के बहुत से तरीक़े हैं। जैसे 1. नमाज़ पढ़ना 2. रोज़ा रखना 3. ज़कात देना 4. हज करना 5. कुरबानी करना 6. एतकाफ़ करना 7. मख़लूक़ को नेक बातों की हिदायत करना 8. बुरी बातों से रोकना 9. माँ–बाप, उस्तादों और बुज़ुर्गों की इज़्ज़त और अदब करना 10. मस्जिद बनाना 11. मदरसा जारी करना 12. दीन का इल्म पढ़ना 13. दीन का इल्म पढ़ाना 14. दीन का इल्म पढ़ने वालों की मदद करना 15. मुसलमानों के अमीर की रहनुमाई में खुदा के रास्ते में ख़ुदा के दुश्मनों से लड़ना 16. ग़रीबों की ज़रूरत पूरी करना 17. भूखों को खाना खिलाना 18. प्यासों को पानी पिलाना और इनके अलावा सब ऐसे काम जो ख़ुदा के हुक्म और मर्ज़ी के मुवाफिक़ हों, सब इबादत में दाखिल हैं, और इन्हीं कामों को आमाले सालेहा कहते हैं।

प्रश्नः मासियत के क्या माने हैं?

उत्तरः मासियत के माने नाफरमानी करना, हुक्म न मानना। जिस काम में खुदा तआला के हुक्मों की ना फ़रमानी होती हो उसे मासियत और गुनाह कहते हैं।

गुनाह करना बहुत बुरी बात है। ख़ुदा तआला का ग़ज़ब और नाराज़गी और अज़ाब गुनाह की वजह से होता है। गुनाहों में सबसे बड़ा गुनाह कुफ़्र और शिर्क है। काफ़िर और मुश्रिक हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे। काफ़िर और मुश्रिक की शफ़ाअत भी कोई नहीं करेगा। कुर्आन मजीद में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि मुश्रिक को मैं कभी नहीं बख़शूंगा।

प्रश्नः कुफ़्र और शिर्क किसे कहते हैं?

उत्तरः जिन चीज़ों पर ईमान लाना ज़रूरी है उनमें से किसी एक बात को भी न मानना कुफ़्र है। जैसे कोई आदमी खुदा तआला को न माने या खुदा तआला की सिफ़तों का इनकार करे, या दो–तीन खुदा माने या फरिश्तों का इन्कार करे, या खुदा तआला की किताबों में

से किसी किताब का इनकार करे, या किसी पैग़म्बर को न माने या तक़दीर से इनकार करे या क़यामत के दिन को न माने या खुदा तआला के बुनियादी हुक्मों में से किसी हुक्म का इनकार करे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दी हुई किसी ख़बर को झूठा समझे तो इन सब सूरतों में काफ़िर हो जायेगा।

और शिर्क उसे कहते हैं कि खुदा तआला की ज़ात या सिफ़ात में किसी दूसरे को शरीक करे।

प्रश्नः ख़ुदा तआला की ज़ात में शिर्क के क्या माने हैं?

उत्तरः ज़ात में शिर्क करने के माने ये हैं कि दो–तीन खुदा मानने लगे जैसे ईसाई, कि तीन खुदा मानने की वजह से मुश्रिक हैं, और आग को पूजने वाले कि दो ख़ुदा मानने की वजह से मुश्रिक हुए, और जैसे बुत–प्रस्त कि बहुत से ख़ुदा मान कर मुश्रिक होते हैं

प्रश्नः सिफ़तों में शिर्क करने के क्या माने हैं?

उत्तरः ख़ुदा की सिफ़ात की तरह किसी दूसरे के लिए कोई सिफ़त साबित करना शिर्क है। क्योंकि किसी मख़लूक़ में चाहे वह फ़रिश्ता हो या नबी, वली हो या शहीद, पीर हो या इमाम, खुदा तआला की सिफ़तों की तरह सिफ़त नहीं हो सकती।

प्रश्नः शिर्क "फिस–सिफ़ात" की कितनी किस्में हैं?

उत्तरः बहुत सी क़िस्में हैं। यहां पर हम कुछ किस्मों का ज़िक्र किये देते हैं।

1. शिर्क फ़िल–कुदरत यानी खुदा तआला की तरह कुदरत की सिफ़त किसी दूसरे के लिए साबित करना। जैसे यह समझना कि फ़ला पैगम्बर या नबी या शहीद वग़ैरा पानी बरसा सकते हैं, या मुरादें पूरी कर सकते हैं या मारना जिलाना उनके क़ब्ज़े में है, या किसी को नफ़ा और नुक़सान पहुंचाने की ताक़त रखते हैं, ये सारी बातें शिर्क हैं।

2. शिर्क फ़िल इल्म–यानी ख़ुदा तआला की तरह किसी दूसरे के लिए इल्म की सिफ़त साबित करना। जैसे यूं समझना कि खुदा ताआला की तरह फुलां पैग़म्बर या वली वगैरह ग़ैब का इल्म रखते थे या खुदा की तरह ज़र्रे–ज़र्रे का उन्हें इल्म है या हमारे सब हालात को जानते हैं या दूर और पास की चीज़ों की ख़बर रखते हैं। ये सब शिर्क फ़िल–इल्म हैं।

3. शिर्क फ़िस–समा वल बसर, यानी ख़ुदा तआला की सिफ़त समा या बसर में किसी दूसरे को शरीक करना, जैसे यह एतक़ाद रखना कि फ़लां पैग़म्बर या वली हमारी सारी बातों को दूर व पास से सुन लेते हैं या हमें और हमारे कामों को हर जगह से देख लेते हैं। यह सब शिर्क है।

4. शिर्क फ़िल हुक्म यानी ख़ुदा तआला की तरह किसी और को हाकिम समझना और उसके हुक्म को ख़ुदा के हुक्म की तरह मानना, जैसे पीर साहिब ने हुक्म दिया कि यह वज़ीफ़ा अस्र की नमाज़ से पहले पढ़ा करो तो इस हुक्म की तामील इस तरह ज़रूरी समझे कि वजीफ़ा पूरा करने की वजह से अस्र का वक़्त मकरूह हो जाने या नमाज़ क़ज़ा हो जाने की परवाह न करे। यह भी शिर्क है।

5. शिर्क फ़िल इबादत– यानी ख़ुदा तआला की तरह किसी दूसरे को इबादत का मुस्तहिक़ समझना, जैसे किसी क़ब्र या पीर को सज्दा करना या किसी के लिए रुकू करना (यानी जिस तरह नमाज़ में रुकू करते हैं) या किसी पीर, पैग़म्बर, वली या इमाम के नाम क़ा रोज़ा रखना या किसी की नज़र और मन्नत माननी या किसी क़ब्र या मुर्शिद के घर का ख़ान–ए–काबा की तरह तवाफ़ करना, ये सब शिर्क फ़िल इबादत है।

प्रश्नः इन बातों के अलावा और भी काम शिर्क के हैं या नहीं?

उत्तरः हाँ! बहुत से काम ऐसे हैं कि उनमें शिर्क की मिलावट है। उन तमाम कामों से परहेज़ करना ज़रूरी है। वे काम ये हैं– नजूमियों से ग़ैब की खबरें पूछना, पंडित को हाथ दिखाना, किसी से फ़ाल खुलवाना, चेचक या किसी और बीमारी की छूत–छात करना और यह समझना कि एक की बीमारी दूसरे को लग जाती है, ताज़िया बनाना अलम उठाना, क़ब्र पर चढ़ावा चढ़ाना नज़र–नियाज़ गुज़ारना, ख़ुदा तआला के सिवा किसी के नाम की क़सम खाना, तस्वीरें बनाना या तस्वीरों की ताज़ीम करना, किसी पीर या वली को ज़रूरत पूरी करने वाला कह कर पुकारना, किसी पीर के नाम की सर पर चोटी रखना, या मुहर्रम में इमामों के नाम का फ़क़ीर बनना, कब्रों पर मेला लगाना, वग़ैरह।

प्रश्नः कुफ़्र और शिर्क के बाद कौन सा गुनाह बड़ा है?

उत्तरः कुफ़्र और शिर्क के बाद बिदअत बड़ा गुनाह है।

बिदअत उन चीज़ों को कहते हैं जिनकी अस्ल शरीअत से साबित न हो यानी कुर्आन मजीद और हदीस शरीफ़ में उसका सबूत न मिले और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, सहाब–ए–किराम, ताबिईन और ताबा–ताबिईन के ज़माने में उसका वजूद न हो और उसे दीन का काम समझ कर किया या छोड़ा जाये। बिदअत बहुत बुरी चीज़ है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बिदत को मरदूद फ़रमाया है और जो आदमी बिदअत निकाले उसको दीन का ढाने वाला बताया है। और फ़रमाया है कि हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही दोज़ख़ में ले जाने वाली है।

प्रश्नः बिदअत के कुछ काम बताऐं।

उत्तरः लोगों ने हज़ारों बिदअतें निकाली हैं। कुछ बिदअतें ये हैं– पक्की क़ब्र बनाना, क़ब्रों पर दिये जलाना, क़ब्र पर चादरें और ग़िलाफ़ डालना, मैय्यत के मकान पर खाने के लिए जमा होना, शादी में सेहरा बाँधना बद्धी पहनाना, और हर जाइज़ या मुस्तहब काम में ऐसी शर्तें अपनी तरफ़ से लगाना जिनका शरीअत से सबूत न हो, बिदअत है।

प्रश्नः कुफ़्र, शिर्क और बिदअत के अलावा और क्या–क्या बातें गुनाह की हैं?

उत्तरः कुफ़्र, शिर्क और बिदअत के अलावा भी बहुत से गुनाह हैं, जैसे झूठ बोलना, नमाज़

शेष पृष्ठ.....38 पर

हज़रत नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अजवाजे मुतह्हरात और अवलादे अतहार रज़ि०

1. उम्मुल मोमिनीन हज़रत खदीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा।

2. उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा।

3. उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा।

4. उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ्सा रज़ियल्लाहु अन्हा।

5. उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते खुजैमा रज़ियल्लाहु अन्हा।

6. उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा।

7. उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा।

8. उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा।

9. उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा।

10. उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफीया रज़ियल्लाहु अन्हा।

11. उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिज़रत से पहले ही हज़रत खदीजा रज़ि० वफात पा चुकी थीं। हज़रत ज़ैनब बिन्ते खुजैमा का इन्तिक़ाल निकाह के दो माह बाद ही हो चुका था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफात के वक्त नौ अज़वाजे मुतह्हरात हयात थीं।

12. उम्मुल मोमिनीन हज़रत मारिया रज़ि० बिन्ते शमऊन आप की बाँदी थीं वह भी आपके निकाह में आईं।

13. उम्मुल मोमिनीन हज़रत रैहाना रज़ि० यह भी आपकी बाँदी थीं आज़ाद हो कर आप के निकाह में आईं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की औलाद–

1). हज़रत क़ासिम रज़ियल्लाहु अन्हु आप बचपन ही में वफात पा गये थे।

2). हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा।

3). हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा।

4). हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा।

5). हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा।

6). हज़रत तय्यिब रज़ियल्लाहु अन्हु।

7). हज़रत ताहिर रज़ियल्लाहु अन्हु।

बाज उलमा ने हज़रत अब्दुल्लाह का नाम भी लिखा है अल्लामा इब्ने क़य्यिम की तहक़ीक है कि तय्यब और ताहिर अब्दुल्लाह के लकब थे वल्लाहु आ़लम। यह सारी औलाद हज़रत ख़दीजा से हैं।

8). हज़रत इब्राहीम रज़ि०, यह हज़रत मारिया से थे इनका भी बचपन में इन्तिक़ाल हो गया था। तय्यब और ताहिर (अब्दुल्लाह) भी बचपन में वफात पा चुके थे।

हज़रत जैनब रज़ि० का निकाह हज़रत खदीजा रज़ि० के भाँजे हज़रत अबुल आस रज़ि० से हुआ था उनसे एक लड़का हुआ जिसका नाम अली था और एक बच्ची हुई जिसका नाम उमामा था।

हज़रत रुक़य्या रज़ि० का निकाह हज़रत उस्मान रज़ि०

से हुआ था उनसे एक बेटा था जिसका नाम अब्दुल्लाह था। ग़ज़व–ए–बद्र के मौक़े पर हज़रत रुकय्या रज़ि0 की वफात हो गई थी उसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी दूसरी बेटी उम्मे कुलसूम रज़ि0 को हज़रते उस्मान के निकाह में दे दिया था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो बेटियों के हज़रत उस्मान रज़ि0 के निकाह में आ जाने के सबब हज़रत उस्मान रज़ि0 का लकब जुन्नूरैन हुआ। हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि0 की भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी ही में वफात हो गई थी।

हज़रत फातिमा रज़ि0 का निकाह हज़रत अली रज़ि0 से हुआ उनसे दो साहिब ज़ादगान हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि0 हुए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नस्ल इन्हीं दो बुजुर्गों से चली और चल रही है। अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला मुहम्मदुंव्व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व अज़वाजिही व बारिक व सल्लिम।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा.....

भी न की जब इद्दत ख़त्म हो चुकी तो दूसरे लोगों के साथ पहले शौहर ने भी निकाह का पैगाम दिया औरत भी उस पर राजी थी मगर औरत के भाई को गुस्सा आया और निकाह को रोक दिया उस पर यह हुक्म उतरा कि औरत की खुशी और तरक्की का ख़्याल रखो उसीके मुवाफिक निकाह होना चाहिए अपने किसी ख़्याल और नाखुशी को दखल मत दो और यह खिताब आम है निकाह से रोकने वालों को, सबको, चाहे पहला शौहर जिसने कि तलाक दी है वह दूसरी जगह औरत को निकाह से रोके, या औरत के गारजियन और वारिस औरत को पहले शौहर से या किसी दूसरी जगह निकाह करने से रोक रहे हों, सब रुकावटों की मुमानियत आ गई, हाँ अगर कायदे के खिलाफ कोई बात हो मसलन गैर कुफ्व (जो बराबर का न हो) में औरत निकाह करने लगे या पहले शौहर की इद्दत के अन्दर किसी दूसरे से निकाह करना चाहे तो बेशक ऐसे निकाह रोकने का हक़ है बिलमारूफ (मुवाफिक दस्तूर के) फरमाने का यही मतलब है।

5. यानी हुक्म जो ज़िक्र किये गये उनसे ईमान वालों को नसीहत दी जाती है क्योंकि उस नसीहत से वही फायदा उठाते हैं और यूं तो नसीहत सभी के लिए है किसी की खुसूसियत नहीं, और मोमिनीन के खास करने से दूसरों पर चेतावनी और उनकी तहकीर भी मफ्हूम होती है यानी जो लोग इन हुक्मों पर अमल नहीं करते गोया उनको अल्लाह और आख़िरत पर ईमान ही नहीं।

6. यानी औरत को निकाह से न रोकने और उसके निकाह हो जाने में वह पाकीज़गी है जो निकाह से रोकने में हरगिज़ नहीं और औरत जब कि पहले शौहर की तरफ रागिब (आकर्षित) हो तो उसी के साथ निकाह हो जाने में वह पाकीज़गी है कि दूसरे के साथ निकाह करने में हरगिज़ नहीं अल्लाह तआला उनके दिलों की बातों को और आगे के नफ़ा नुक़्सान को खूब अच्छी तरह जानता है और तुम नहीं जानते।

❑❑

नबी सल्ल0 के तज्हीजो तक्फीन का बयान

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तज्हीजो तक्फीन का कार्य दूसरे दिन मंगल 13 रबीउल अव्वल को शुरु हुआ, इस विलम्ब के अनेक सबब थे।

1. अकीदत मंदों को यकीन नहीं आता था कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस दुनिया को अल्विदा कहा, अतः हज़रत उमर रज़ि0 ने तलवार खींच ली, कि जो यह कहेगा कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वफात पाई उसका सर उड़ा दूंगा, लेकिन हज़रत अबू बक्र रज़ि0 आये और उन्होंने सारे सहाबा रज़ि0 के सामने तकरीर की कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस दुनिया से तश्रीफ ले जाना यकीनी था और कुर्आन मजीद की आयतें पढ़ कर सुनाई, तो लोगों की आँखें खुलीं और इस निश्चत सत्य का यकीन आया।

2. उसके बाद इतना समय नहीं रहा था कि सूरज डूबने से पहले तज्हीजो तक्फीन से छुट्टी हो सके।

3. कब्र खोदने का कार्य गुस्ल व कफन के बाद शुरु हुआ, इसलिए देर तक इंतिजार करना पड़ा।

4. जिस कमरे में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वफात पाई थी वहीं लोग तरतीबवार थोड़े–थोड़े कर के जाते और नमाजे जनाजा अदा करते थे, इसलिए भी बड़ी देर लगी और मंगल का पूरा दिन गुज़र कर रात को फरागत मिली।

तज्हीजो तक्फीन की खिदमत खास अजीज़ों और रिश्तेदारों ने अंजाम दी, फज्ल इब्ने अब्बास रज़ि0 और उसामा इब्ने जैद रज़ि0 ने पर्दा किया और हजरत अली रज़ि0 ने गुस्ल दिया, हज़रत अब्बास रज़ि0 भी उस जगह मौजूद थे, और कुछ रिवायतों में है कि उन्हींने पर्दा भी किया था, चूंकि इस सम्मान जनक कार्य में हर आदमी शामिल होना चाहता था, इसलिए हज़रत अली रज़ि0 ने अन्दर से दरवाजे के पट बंद कर लिए थे, कबीले अंसार के लोगों ने दरवाजे पर आवाज दी कि खुदा के लिए हमारे हुकूक का भी ख़्याल रखिए, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत गुज़ारी में हमारा भी हिस्सा है, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने जैसा कि वाकदी का ब्यान है फरमाया कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में किसी का हक नहीं है, इसलिए अगर सब को अनुमति दी गयी तो काम रह जायेगा, लेकिन (अंसार के आग्रह पर) हज़रत अली रज़ि0 ने औस इब्ने खौला अंसारी रज़ि0 जो असहाबे बद्र में थे, अंदर बुला लिया, वह पानी का घड़ा भर–भर कर अंदर लाते थे। हज़रत अब्बास रज़ि0 और उनके दोनों बेटे कसम, और फज्ल, जिस्मे मुबारक की करवटें बदलते थे, और उसामा इब्ने जैद ऊपर से पानी डालते थे।

खुलफाए राशदीन की ख़िलाफ़त का ज़माना

(13 रबीउल अव्वल सन् 11 हि0 से रबीउल अव्वल 41 हि0 तक 30 साल)

हज़रत अबू बक्र रज़ि0– हज़रत नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात 12 रबीउल अव्वल सन् 11 हि0 पीर के दिन हुई। 13 रबीउल अव्वल सन् 11 हि0 से हज़रत अबू बक्र रज़ि0 की ख़िलाफ़त शुरु हुई। दो साल तीन महीने नौ दिन हुकूमत की 22 जुमादल उख़रा सन् 13 हि0 को वफ़ात पाई।

हज़रत उमर रज़ि0–हज़रत अबू बक्र रज़ि0 की वफ़ात के बाद सन् 13 हि0 में ख़लीफ़ा हुए और 10 वर्ष 6 माह 5 दिन हुकूमत फ़रमाई 27 ज़िलहिज्जा सन् 23 हि0 को ज़ख़्मी हुए और पहली मुहर्रम सन् 24 हि0 को शहादत पाई।

हज़रत उस्मान रज़ि0– हज़रत उमर रज़ि0 की शहादत के बाद ख़लीफ़ा हुए 12 दिन कम बारह साल हुकूमत की 22 ज़िलहिज्जा सन् 35 हि0 को शहादत पाई।

हज़रत अली रज़ि0–हज़रत उस्मान रज़ि0 की शहादत के बाद ख़लीफ़ा हुए, 3 माह 3 दिन कम पाँच साल हुकूमत की और 18 रमज़ान सन् 40 हि0 को शहादत पाई।

हज़रत हसन रज़ि0– हज़रत अली रज़ि0 की शहादत के बाद आप ख़लीफ़ा हुए और सिर्फ 6 माह आपकी ख़िलाफ़त रही ..... रबीउल अव्वल सन् 41 हि0 को हज़रत मुआविया रज़ि0 से सुलह करके ख़िलाफ़त से दस्त बरदार हो गए। .....सन् 50 हि0 में आप को ज़हर दिया गया और आप शहीद हो गये। ❑❑

कफन– हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तीन सूती सफेद कपड़े जो सुहूल के बने हुए थे कफन में दिये गये, उनमें कमीज़ और पगड़ी न थी।

गुस्लो कफन के बाद यह सवाल पैदा हुआ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दफन कहाँ किया जाय, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने कहा, नबी जिस जगह वफात पाता है वहीं दफन भी होता है, अतः लाशे मुबारक उठा कर और बिस्तर उलट कर हज़रते आयशा रज़ि0 के कमरे में उसी जगह पर कब्र खोदने का फैसला हुआ, (हज़रत आयशा रज़ि0 कहती हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किसी मैदान में इसलिए दफन नहीं किया गया कि आखरी वक्त में आप को यह ख़्याल था कि लोग बेपनाह महब्बत व अक़ीदत की वजह से मेरी कब्र को भी इबादत गाह न बना लें, मैदान में उसकी रोक–टोक मुश्किल थी, इसलिए कमरे के अन्दर दफन किया गया)।

कब्र का बयान– मदीने में दो लोग कब्र खोदने में माहिर थे, हज़रत अबू उबैदा रज़ि0 अहले मक्का के रिवाज के मुताबिक संदूकी कब्र खोदते थे, और अबू तलहा रज़ि0 मदीना

शेष पृष्ठ..... 37 पर

इख़्लास और उसके बरकात व फायदे

प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी —मौ0 सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0

इख़्लास क्या है?

अल्लाह की इबादत और आज्ञापालन में मश्गूल रहना इस तौर पर कि उसकी रजा मंदी ही मतलूब हो, कोई और मकसद न हो जो काम भी करे वह इसलिए करे कि अल्लाह खुश हो जाये इसी का नाम इख़्लास है, और यह जीवन के प्रत्येक विभाग से सम्बन्धित है।

अल्लाह तआला का इरशाद है कि हमने तुम को पैदा किया है इबादत के लिए और यह हुक्म है कि अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा पालन करो, इससे मालूम हुआ कि हमारी जिन्दगी में दो चीज़ें हैं, एक इबादत, और दूसरी इताअत तो इबादत और इताअत दोनों में अल्लाह को खुश करना मकसूद हो कुर्आन में अल्लाह तआला फरमाता है कि जो अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा वही कामयाब है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत का सम्बन्ध जीवन के हर क्षेत्र से है, जब मनुष्य सुबह सो कर उठता है तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को याद करता है कि सो कर उठने पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ुबान मुबारक पर कौन से अल्फ़ाज़ आते थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या क्या किया करते थे? इसके अनुसार अपना वकत गुज़ारा जाये।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने विभिन्न लोगों के हुकूक ब्यान फरमाये हैं, माँ–बाप के हुकूक क्या हैं? भलाई करने वाले और उस्तादों के हुकूक क्या हैं? उस्ताद आपको ठीक राह दिखाने वाला और ठीक ठीक मार्ग दर्शक है उसका एहसान आप किस रूप से चुकायें इन लोगों के साथ क्या मुआमला करें, यह सारी चीज़ें इताअत में सम्मिलित हैं इस तरह आप देखेंगे तो जीवन का हर क्षेत्र, और हर पल उसमें सम्मिलित है और दोनों का उद्देश्य यह है कि अल्लाह की रजा और खुश्नूदी प्राप्त हो जाये, जो काम भी किया जाये इसी नियत से किया जाय कि अल्लाह राज़ी हो जाये यही अस्ल चीज़ है।

कसौटी इख़्लास है–

बड़ों और छोटों में अन्तर और इम्तियाज़ "इख़्लास" का होता है हम में और हमारे बड़ों में अन्तर यह है कि वह जो कार्य भी करते हैं अल्लाह को राजी करने के लिए करते हैं, और दूसरे लोगों के कार्य करने के विभिन्न उद्देश्य होते हैं, कहीं दिखावा आ जाता है, कहीं अपनी श्रेष्ठता कहीं अपना चमत्कार, कहीं और कुछ दुनियावी फायदे दिमाग में आने लगते हैं और इख़्लास खोटा हो जाता है और उसमें कमी आ जाती है और यह हकीकत है कि जिस क़द्र कमी आयेगी उसी क़द्र अमल का नफा कम हो जायेगा दुनियावी एतबार से भी और आखिरत के एतबार से भी, बाज वक्त दुनियावी फायदे हासिल हो जायेंगे लेकिन आखिरत में बिल्कुल बेकार और जीरो,

इसलिए बार–बार इस बात का ख़्याल रखने का हुक्म दिया गया है कि कोई भी काम किया जाये तो अल्लाह को राज़ी और खुश करने के लिए किया जाय।

तबीअतों का फर्क़–

इन्सान की तबीअतें भिन्न–भिन्न होती हैं, कुछ तबीअतें जल्दी कुबूल करती हैं और कुछ देर में, जब आदमी मेहनत करता है तो अल्लाह मदद फरमाता है।

मसलन एक आदमी है उसने कहा कि हमारा यह काम कर दो, आपने कर दिया, आप को काम का शौक था, इसमें दो बातें हैं, एक तो आपने नियत की ही नहीं, दूसरे यह सोच कर किया कि हम इसका काम कर देंगे, तो यह हमारा काम कर देगा, हमारी मदद करेगा, हमें पैसा देगा, या हम को ओहदा देगा या यह कि लोग कहेंगे कि बड़े समाज सेवी है अगर यह नियत पैदा हो गयी तो काम बेकार, अल्लाह के यहाँ इस कार्य का कोई लाभ नहीं, काम भी गया और लाभ भी कुछ नहीं मिला, दूसरी बात यह है कि काम करने का जी नहीं चाह रहा है लेकिन देखा कि इस वक्त काम करेंगे तो दीनी फायदा होगा, इसलिए उठे कि एक इन्सान की खिदमत करने का सवाब मिल जायेगा और नियत की कि इस काम से अल्लाह राजी हो जाये कहते हैं कि खिदमत करने से खुदा मिलता है यह मुहावरा जब ही बोला जाता है जब खिदमत अल्लाह के लिए की जाये और अगर खिदमत फायदा उठाने के लिए की जाय तो अल्लाह के लिए थोड़ी होगा?

बेनियती समय का बड़ा मर्ज़–

हमारे हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 फरमाया करते थे कि इस समय का मर्ज बद नियती नही है बल्कि बे नियती है हम अच्छे से अच्छा काम करते हैं कि पहले आदत ही डाली जाती है फिर उसको इबादत में परिवर्तित कर लिया जाता है मसलन नमाज़, आदेश यह है कि जब बच्चा सात साल का हो जाये तो नमाज़ की आदत डालें, और दस साल का हो जाये तो दबाव डालें, या यूं समझ लीजिए कि पहले ढांचा बनता है फिर रूह फूंकी जाती है हज़रत आदम अ0 का भी पहले ढांचा बनाया गया, फिर रूह फूंकी गयी जब रूह निकल जाती है तो इन्सान को मुर्दा करार दे दिया जाता है और उसे मिट्टी में मिला देते हैं ऐसे ही आमाल की रूह इख़्लास है, हम लोग जो भी काम करते हैं वह सब ढ़ांचे है, इख़्लास होगा तो ज़िन्दा और बाकी रहेंगे वरना मिट्टी में मिल जायेंगे, मालूम हुआ कि बच्चा पंद्रह साल की उम्र से पहले जो नमाज़ें जो रोज़े वगैरह रखता है वह ढ़ांचा है जब पंद्रह साल का होगा तो अब कहा जायेगा कि नमाज़ इख़्लास और नियत के साथ पढ़ो, अल्लाह को राजी करने के लिए पढ़ो और उसकी मशक करो ताकि नमाज़ में जान पैदा हो जाये।

सिर्फ ढ़ांचे से क्या होता है? मुर्दा अजायब घर में शेर, हाथी, चीते खड़े हैं और आप गुज़र जाते हैं लेकिन ज़िन्दा अजायब घर में सबको बन्द करके रखा जाता है वरना वह फाड़ खायेंगे जैसे जानवर के लिए रूह की ज़रूरत है वैसे आमाल के लिए इख़्लास की, हदीस में आता है कि अल्लाह तआला सूरतों और जिस्मों को नहीं देखता बल्कि दिलों को देखता है।

इख़्लास कैसे पैदा हो?

इख़्लास पैदा होता है इख़्लास वालों के पास बैठ कर और उनसे सीख कर, यह भी बिल्कुल आम बात है कि मनुष्य जिस भी कार्य को सीखना चाहता है उसके कारीगर के पास ही सीखता है अल्लाह वालों की संगत का जो हुक्म दिया गया है वह इस वास्ते कि वह इख़्लास वाले होते हैं जो कार्य करते हैं अल्लाह को राज़ी करने के लिए करते हैं, आदमी उनके साथ रहेगा तो उसके अन्दर इख़्लास पैदा हो जायेगा उसके बाद दो रकअत इख़्लास वाली नमाज़ सैकड़ों रकअतों पर भारी, पिछले तमाम गुनाहों को खत्म करने वाली और माफ करने वाली होती हैं। लेकिन ऐसा होता है कि जब आदमी इख़्लास से काम करना चाहता है तो बार--बार ख़्याल आता है, कि फलां देख रहा है, फलां को मालूम होगा तो अच्छा कहेंगे, इससे परेशान हो कर काम को न रोकना चाहिए और कोई हानि भी नहीं हाँ शुरु में नियत यह होनी चाहिए कि किसी को मालूम न हो अल्लाह के लिए करे, फिर अल्लाह उसमें बरकत अता फरमाता है, काम बढ़ता चला जाता है, और कहीं वापसी नहीं होती लेकिन अगर अल्लाह को राज़ी करने के लिए काम नहीं करता तो बड़े से बड़ा काम भी जहन्नम में पहुंचा देगा।

लेकिन शुरु में जरूरत है उसके ट्रेनिंग की, जब आदमी ज़्यादा से ज़्यादा नेक लोगों, इख़्लास वालों, अल्लाह वालों के पास रहेगा तो उनकी आदतें, सिफतें उसके अंदर पैदा हो जायेंगी इसलिए उनको सिर्फ अपने ऊपर क्यास न करो कि वह भी हमारी तरह खाते, पीते नमाज़ पढ़ते हैं, और हम भी यही सब करते हैं क्योंकि उनका इख़्लास, उन का अल्लाह पर यकीन उस मकाम पर पहुंचा देती है कि हम तसव्वुर भी नहीं कर सकते, इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो रकअत के बराबर किसी की नमाज़ नहीं हो सकती इसलिए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो इख़्लास हासिल है वह किसी को हासिल नहीं हो सकता।

और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 की दो रकअतें तमाम उम्मत पर भारी हैं क्योंकि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सबसे ज़्यादा करीब रहे, सब से ज़्यादा सोहबत में रहे, इसलिए उनको इसके तमाम असारात हासिल हो गये, और उनको इख़्लास का वह मकाम मिला कि किसी सहाबी को नहीं मिला, इस पर सब का इत्तेफाक़ है कि पहले अबू बक्र रज़ि0, फिर उमर रज़ि0, फिर उस्मान रज़ि0, फिर अली रज़ि0, यह चार सबसे अफ़ज़ल हैं उसके बाद वह दस सहाबा जिन में यह चारों खुलफा शामिल हैं, को दुनिया ही में जन्नत की खुशखबरी दी गयी। जिनको अश्रऐ मुबश्शरा कहा जाता है, तो जो मुख़्लिसीन के साथ रहता है तो अल्लाह पाक उसको इख़्लास अता फरमाते हैं, और जो मुफ्लिसीन के साथ रहेगा उसमें इफ़्लास पैदा होगा।

मुफ़्लिस कौन?

मुफ्लिस दो तरह के होते हैं, एक नमाज़ रोज़ा और अच्छे आमाल वाले, कि इख़्लास न होने की वजह से मुफ़्लिस हो गये, या बन्दों के हुकूक उनके जिम्मे हैं, किसी

को मारा किसी को गाली दी वगैरह इस तरह उनके अच्छे आमाल दूसरों को दे दिये जायेंगे उसके खत्म होने पर उनके बुरे आमाल उनके सर डाल दिये जायेंगे इसलिए ऐसे लोगों की सोहबत में न बैठे जहाँ गीबत हो, और दूसरों पर झूठे इलज़ाम लगाये जाते हों, और इधर उधर की बेतुकी बातें होती हों इससे इख़्लास नहीं इफ़्लास पैदा होगा, आजकल देख लीजिए इफ़्तार पार्टियाँ होती हैं, दीन के नाम पर खर्च भी किया जाता है और यह भी फरमाईश की जाती है कि अगर मेरे नाम का ऐलान होगा तो इतना दूंगा, इन सब बातों से इख़्लास खत्म हो जाता है और कोई फायदा नहीं होता, ऐसे आमाल सिर्फ ढांचा है और मिट्टी में मिला दिये जायेंगे, इसलिए इख़्लास वाला थोड़ा अमल भी अल्लाह के यहाँ बड़ा दर्जा रखता है इसलिए हम सबको कोशिश करनी चाहिए कि अल्लाह तआला हम सबको इख़्लास अता फरमाये और उसकी बरकत से दुनिया में भी राहत व आराम अता फरमाये।

जारी .....

हिन्दुस्तानी मुसलमान.....

धरती तथा आकाश के सृष्टा तू ही लौकिक एवं अलौकिक संसार में मेरा संरक्षक है। मेरा अन्त इस्लाम पर कर और मुझे सदाचारियों के साथ सम्बद्ध कर।"

(कुर्आन मजीद–यूसुफ–101)

अब अन्त में इससे पूर्व कि वर के मुख से उन पवित्र शब्दों "मैंने कुबूल किया" का उच्चारण हो, जिसके सुनने के लिए समस्त उपस्थित व्यक्ति कान लगाये हैं, कुर्आन मजीद सन्देश देता है कि ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सच्ची तथा पक्की बात ज़बान से निकालो। मानो वर को निर्देश दिया जा रहा है कि वह अपने मुख से निकलने वाले शब्दों के उत्तरदायित्व और उसके भावी परिणामों की अनुभूति कर इन शब्दों को मुख से निकाले कि "मैंने कुबूल किया" तो इस बात का मनन करे कि उसे कितने गम्भीर एवं महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व के प्रति वचन दिया और इससे उसने कितने बड़े दायित्व का अंगीकरण किया है। फिर फ़रमाया कि यदि कोई ऐसे ही जांच तौल कर बात करने की प्रवृत्ति अपने अन्दर पैदा कर ले और उसके अन्दर दृढ़ता पूर्वक अपने उत्तरदायित्व के प्रति अनुभूति की उत्पत्ति हो जाय तो उसका समस्त जीवन और उसके कथन एवं आचरण सत्यता एवं सत्यनिष्ठा के साँचे में ढल जायेंगे, और उसका जीवन एक आदर्श जीवन का रूप धारण कर लेगा और खुदा की मग़फिरत (क्षमादान) तथा रज़ामंदी का पात्र हो जायेगा और फिर इस सन्देश को इस तथ्य पर समाप्त किया कि वास्तविक सफलता खुदा की बन्दगी और उसके रसूल के आज्ञा पालन में निहित है, न की दास्ता में, न रीति–रिवाज के प्रतिबन्ध में।

निकाह सम्बन्धी व्याख्यान तथा लड़के–लड़की की पारस्परिक स्वीकृति के बाद छुवारे जो इसी अवसर के लिए लाये जाते हैं लुटाये अथवा बाँट दिये जाते हैं, और यह विवाहोत्सव की परम्परागत पुरानी सुन्नत है।"

❖❖❖

के रिवाज के मुताबिक लहदी (बगली) लोगों में इख़्तिलाफ पेश आया कि किस किस्म की कब्र खोदी जाय, हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा इख़्तिलाफ मुनासिब नहीं दोनों लोगों के पास आदमी भेजा जाय, जो पहले आ जाये, लोगों ने इस राय को पसंद किया, अतः हज़रत अब्बास रज़ि0 ने दोनों लोगों के पास आदमी भेजे, इत्तेफाक़ यह कि हज़रत अबू उबैदा रज़ि0 घर पर मौजूद न थे, अबू तलहा रज़ि0 आये और उन्हीं ने मदीना के रिवाज के मुताबिक कब्र खोदी, जो लहदी यानी बगली थी चूंकि ज़मीन थोड़ी गीली थी इस लिए जिस बिस्तर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वफात पाई थी, वह कब्र में बिछा दिया गया।

जनाज़ा तैयार हो गया तो लोग नमाज़ के लिए टूटे (जनाज़ा कमरे के अन्दर था, बारी बारी से लोग थोड़े थोडे कर के जाते थे) पहले मर्दों ने, फिर औरतों ने फिर बच्चों ने नमाज़ पढ़ी, लेकिन कोई इमाम न था। जिस्मे मुबारक को हज़रत अली रज़ि0, फज्ल इब्ने अब्बास (उसामा इब्ने जैद और अब्दुर्रहमान इब्ने औफ रज़ि0) ने कब्र में उतारा।

❖❖❖

मोमिन की सिफात

मोमिन तो इक इलाह पर ईमान रखता है
प्यारे नबीये पाक पर कुर्बान रहता है
हर जा वो शिर्क व कुफ्र से करता है इजतिनाब
बिदआत से आमाल को करता नहीं ख़राब
गर जान जाये उस की परवा नहीं करता
तौहीद से पर शिर्क की जानिब नहीं फिरता
है मांगता दुआ कि शैतां से रहे दूर
दिल पाक व साफ उसका हो, हो रब का उसमें नूर
रोज़ी हलाल खाता है, खाता नहीं हराम
हर क़िस्म के गुनाह से बचता है वह मुदाम
चोरी, ज़िना, डकैती से रहता सदा है दूर
गाली, गलौज़ झगड़े से रहता बहुत है दूर
रहता है वह जहां भी होता है घां सुकूं
नाहक़ किसी का हरगिज़ करता नहीं है खूं
उसका पड़ोस उससे रहता है मुतमईन
मशगूल अपने काम में रहता है रात दिन
ख़ल्क़े खुदा की खिदमत करता है वह सदा
हर नेक रूह उसकी ख़िदमात पर फ़िदा
ज़ालिम का जुल्म देख कर है रोकता उसे
मुनकर जहां भी देखता, है टोकता उसे
मिलता है जो भी उससे मसरूर होता है
मिलने पे वह दोबारा मजबूर होता है
यारब सिफ़ाते मोमिन हमको भी कर अता
प्यारे नबी पे उतरे रहमत तेरी सदा

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी.....

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया वित्र सुब्ह होने से पहले पढ़ लो। (मुस्लिम)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को नमाज़ पढ़ा करते थे और मैं सामने लेटी रहती थी, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ लेते और वित्र बाक़ी रहती तो मुझ को जगा देते और मैं पढ़ लेती। (मुस्लिम)

और एक रिवायत में है कि जब वित्र बाकी रह जाती तो मुझ को जगा कर इरशाद फरमाते कि उठो, वित्र पढ़ो। (अबू दाऊद–तिर्मिज़ी)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि सुब्ह ज़ाहिर होने से पहले वित्र पढ़ लो।

(अबू दाऊद–तिर्मिज़ी)

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिसको डर हो कि शायद आख़िर रात में आँख न खुले वह शुरु रात ही में वित्र पढ़ ले और जिसको आखिर रात में उठने की उम्मीद हो तो वह आखिर रात ही में पढ़े इस लिए कि आखिर रात की नमाज़ के वक्त फरिश्ते हाज़िर होते हैं और यह ज़्यादा फज़ीलत की बात है। (मुस्लिम)

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर .....

न पढ़ना, रोज़ा न रखना, ज़कात न देना, माल और ताक़त होते हुए भी हज न करना, शराब पीना, चोरी करना, ज़िना करना, ग़ीबत करना, झूठी गवाही देना, किसी को नाहक़ मारना व सताना, चुग़ली खाना, धोखा देना, माँ–बाप और उस्ताद की नाफ़रमानी करना, अपने घरों और कमरों में तस्वीरें लगाना, अमानत में ख़यानत करना, लोगों को हकीर और ज़लील समझना, जुआ खेलना, गाली देना, नाच देखना, सूद लेना और देना, दाढ़ी मुंडाना, टख़नों से नीचा पाजामा, पत्लून या लुंगी पहनना, फजूल ख़रची करना, खेल तमाशों, नाटकों थियेटरों में जाना और इनके अलावा और भी बहुत से गुनाह हैं जो बड़ी किताबों में लिखे हैं।

प्रश्नः गुनाह करने वाला आदमी मुसलमान रहता है या नहीं?

उत्तरः जो कोई ऐसा गुनाह करे जिसमें कुफ़्र या शिर्क पाया जाता हो वह मुसलमान नहीं रहता बल्कि काफ़िर और मुश्रिक हो जाता है और जो कोई बिदअत का काम करे तो वह मुसलमान तो रहता है लेकिन उसका इस्लाम और ईमान बहुत नाक़िस हो जाता है ऐसे आदमी को बिदअती कहते हैं और जो कोई कुफ़्र, शिर्क और बिदअत के अलावा कोई कबीरा गुनाह करे वह भी मुसलमान तो है लेकिन नाक़िस मुसलमान है। उसे फ़ासिक़ कहते हैं।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पो0 बा0 93, टैगोर मार्ग
लखनऊ 226007 यू0 पी0 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس/۹۳، ٹیگور مارگ،
لکھنؤ ۲۲۶۰۰۷ یوپی (بھارت)

दिनांक 10/11/13

باسمہ تعالیٰ

تاریخ ۵/محرم الحرام ۱۴۳۵ھ

अहले ख़ैर हज़रात से अपील

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हजरत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की सरपरस्ती में अपनी इल्मी व दीनी खिदमात में मस्रूफ़ है, और तालिबाने उलूमे नुबुव्वत जूक़ दर जूक़ आ आ कर इस सरचश्मए इल्म से फैजियाब हो रहे हैं, तलबा की कसरत की वजह से दारुलउलूम की मस्जिद तंग हो गई है, बारिश या धूप में तलबा को बहुत तकलीफ होती है, इस सूरते हाल को देख कर अल्लाह तआला की मदद के भरोसे पर मस्जिद की मजीद तौसी का फैसला किया गया है।

मस्जिद दारुलउलूम के वसी सहेन के नीचे बेसमेन्ट और सहन पर छत डाल कर उसके ऊपर एक मंजिल तामीर करने का मंसूबा है, जिस पर ₹ 1,94,59,700/— ख़र्च का तख़्मीना है, जो इंशाअल्लाह अहले ख़ैर हज़रात के तआवुन से पूरा होगा।

हम उम्मीद करते हैं कि आप इस अहम जरूरत की तरफ फौरी तवज्जुह फरमाएंगे और नदवतुलउलमा के कारकुनों का हाथ बटाएंगे और मस्जिदों की तामीर में अल्लाह ने जो अज्र व सवाब रखा है उसके मुस्तहिक बन सकेंगे, रसूले अकरम सल्ल0 का इरशाद गिरामी है कि:—

"जो कोई अल्लाह के लिए मस्जिद तामीर कराएगा,
अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में घर तामीर कराएगा"।

मौ0 मुफ़्ती मु0 ज़हूर नदवी
(नाएब नाज़िम, नदवतुल उलमा)

मौ0 मु0 वाज़ेह रशीद नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)

प्रो0 अतहर हुसैन
(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)

मौ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
(मोहतमिम, दारुलउलूम नदवतुल उलमा)

मौ0 मु0 हमज़ा हसनी नदवी
(नाज़िरे आम, नदवतुल उलमा)

चेक/ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।
NADWATUL ULAMA
A/C NO. 10863759733
(State Bank of India Main Branch, Lucknow)

और इस पते पर भेजें।
NAZIM NADWATUL ULAMA,
P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,
LUCKNOW-226007 (U.P.)

Phone : (+91-0522) 2741316, 2740151 / Fax : (+91-0522) 2741023, 2741231
E-mail address : nadwa@sancharnet.in / Website : www.nadwatululama.org.

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

पारसी दंपतियों को बच्चे पैदा करने पर मिलेगा भत्ता-

पारसियों की जनसंख्या में आ रही अप्रत्याशित कमी को देखते हुए बंबई पारसी पंचायत ने घोषणा की है कि वह उन दंपतियों को मासिक भत्ता देगा जो दूसरे या तीसरे बच्चे को जन्म देते हैं।

पंचायत के अध्यक्ष दिनशां मेहता ने कहा कि गुजरात के वलसाड जिले के संजान में हुई समुदाय की बैठक में निर्णय किया गया कि जो पारसी दंपति दूसरे बच्चे को जन्म देता है उन्हें बच्चे के बालिग होने तक तीन हज़ार रूपये प्रति माह भत्ता दिया जाएगा। जब कि तीसरे बच्चे को जन्म देने वाले दंपतियों को पाँच हज़ार रूपये प्रति माह का भत्ता मिलेगा।

113 साल पहले हुई शुरूआत-

नोबेल पुरस्कारों की शुरुआत नोबेल फाउंडेशन ने स्वीडन के वैज्ञानिक अल्फ्रेड नोबेल की याद में 1901 में की थी। नोबेल पुरस्कारों की संपूर्ण व्यवस्था अल्फ्रेड द्वारा अर्जित आविष्कारों की राशि के दान से होती है। अल्फ्रेड नोबेल ने कुल 355 आविष्कार किए जिनमें 1867 में किया गया डायनामाइट का आविष्कार भी शामिल है। डायनामाइट के आविष्कार ने अल्फ्रेड को मालामाल कर दिया था। अल्फ्रेड द्वारा मृत्यु से पूर्व लिखे गए इच्छा पत्र की अनुपालना से ही नोबेल पुरस्कारों का जन्म हुआ था। दिसम्बर 1896 में अपनी मृत्यु से पूर्व अल्फ्रेड नोबेल ने संपत्ति का कुछ भाग परिवार को देने के बाद बाकी नोबेल पुरस्कारों के लिए दे दी।

कैसे हुई शुरूआत- फ्रांस के एक अखबार ने अल्फ्रेड के भाई की मृत्यु को अल्फ्रेड की मृत्यु समझ लिया था और अखबार में शीर्षक दिया था "मौत के सौदागर की मृत्यु"। इस लेख में उन्हें अनेक लोगों की मौत का जिम्मेदार मानते हुए उनकी निंदा की थी। अखबार ने लिखा था कि मौत की मशीन डायनामाइट का आविष्कार करने वाला इसके बल पर धनवान बना और आज खुद मर गया। इस समाचार ने अल्फ्रेड की आँखें खोल दीं। उन्होंने लोगों में अपने प्रति अच्छी भावना पैदा करने लिए संपत्ति को दान करने का फैसला किया और नोबेल की शुरुआत हुई।

अल्फ्रेड का निजी जीवन-

अल्फ्रेड वर्नहार्ड नोबल का जन्म 21 अक्तूबर 1833 को स्वीडन के स्वाकहोम में हुआ था। उनके पिता केमिकल इंजीनियर थे। पहले अल्फ्रेड साहित्य में रुचि रखते थे, लेकिन उनके पिता उन्हें रसायन इंजीनियर बनाना चाहते थे। मेधावी अल्फ्रेड रसायन इंजीनियर बन कर सेना के लिए हथियार बनाने लगे।

कैसे होता है विजेताओं का चयन-

विजेताओं के चयन के लिए पुरस्कार देने के एक साल पहले सितम्बर में नामांकन नोबेल कमेटी के पास भेजा जाता है। यह नामांकन विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले संगठन और व्यक्ति भेजते हैं। शांति के पुरस्कार के लिए सरकार नामांकन भेजती है। पुरस्कार वाले साल के जनवरी माह तक नामांकन वापस लिए जा सकते हैं। 3000 आवेदनों में से नोबेल समिति 300 नामांकन चुनती है। समिति नामांकन रिपोर्ट एक्सपर्ट को भेजती है। ❑❑